Postal Registration
No. MNW/318/2020-2022

हिंदी मासिक पत्रिका ISSN No. : 2582-4694 MAHHIN/2015/67048

मुस्कान

मुंबई : सितम्बर-अक्टूबर 2021

...एक एहसास

- वर्ष : 6
- अंक : 7
- मूल्य : 30/-

महाराजा अग्रसेन जयंती

रिश्ते होते हैं खुशनुमा

शिक्षा और अध्यात्म

Published on 10th of every month Posting date : 11 & 12 of each month at Kandivali West PO, Mumbai - 67.
Shri Samarth CHS Ltd, D/3, Plot No. 809, Sector 8, Charkop, Kandivali, Mumbai-400067

VISIT…

भावभीनी श्रद्धांजलि

श्री किशोरीलालजी झुनझुनवाला

वैकुण्ठवास : 4 सितंबर 2021

समाज सेवा के सिद्ध पुरुष, उदारमना दानवीर, उद्योगपति श्री किशोरीलालजी झुनझुनवाला के अप्रत्याशित गोलोक गमन से मुंबई का सामाजिक जगत स्तब्ध एवं हतप्रभ है। बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी, विनम्रता के विग्रह श्री किशोरीलालजी मुंबई की अनेक संस्थाओं से संबद्ध थे कई सामाजिक व समाजोपयोगी संस्थाओं के ट्रस्टी थे। उनके निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। ऐसे समर्पित सेवा पुरुष श्री किशोरीलालजी झुनझुनवाला की परमचेतना को प्रणाम करते हुए ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा समस्त झुनझुनवाला परिवार एवं इष्ट मित्रों को इस असीम दु:ख को सहन करने की शक्ति दे।

करतें हैं हम अर्पित श्रद्धांजलि आपको, परमात्मा में विलीन रहे आत्मा आपकी।
मोक्ष हो, मोह-माया का अंश भी न हो, नश्वर जग से सुदूर रहे जीवात्मा आपकी ।।

मुस्कान परिवार

हिंदी मासिक पत्रिका

मुस्कान एक एहसास

सितम्बर - अक्टूबर, 2021

● वर्ष : 7 ● अंक : 6 ● पृष्ठ : 32 ● मूल्य : 30 रूपए

संपादक

लालबहादुर यादव "लल्लन"

मो. 9833232327

Email : muskanekehsas@gmail.com

विज्ञापन के लिए संपर्क करें।

मो. 9833232327

ई-मेल : muskanekehsas@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक

लालबहादुर यादव द्वारा सेक्टर 8, चारकोप, कांदिवली (प), मुंबई - 400067 से प्रकाशित एवं संजय टी. गडा, सेलेक्शन स्कैन डी प्रिंट, गणेश सोसायटी, डिसिल्वा बाग, असल्फा, घाटकोपर, मुंबई - 400084 से मुद्रित

पत्र व्यवहार का पता:

डी बी ओझोन, बिल्डिंग नं 15, फ्लैट नं. 1701, 17वीं मंजिल, दहिसर चेकनाका, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, ठाकुर मॉल के पास, मीरारोड (पूर्व), मुंबई- 401107

5 स्वच्छ भारत अभीयान २.० और मिशन अमृत महोत्सव की प्रधानमंत्री ने की शुरुआत

7 महाराज अग्रसेन युग प्रवर्तक

8 बालों को रोकने के उपाय

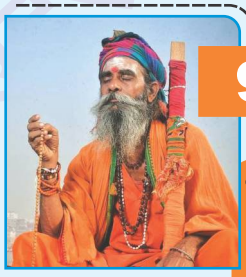

9 साधु का हठ

10 रिश्ते होते हैं खुशनुमा

11 क्यों टूटता है रिश्तों का बंधन

17 राधा जन्मोत्सव

26 यात्रा पर शुभ व अशुभ विचार

फिल्म जगत

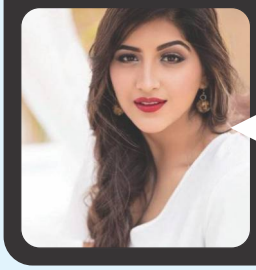

28 छोटी सरदारनी फेम निमरित कौर अहलूवालिया का ओटीटी डेब्यू

28 द कपिल शर्मा शो के खिलाफ शिकायत

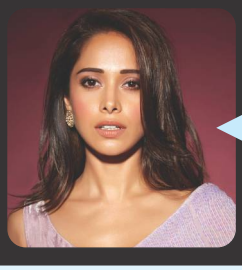

30 नुसरत भरुचा एशियन कंटेंट अवार्ड्स में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए हुई नॉमिनेट

नव युवक व भारतीय त्योहार

देश के इतिहास में इस माह को पवित्र व त्योहारों से भरा हुआ माना जाता है। जहाँ नवरात्रि की धूम, दशहरे की रौनक, महाराजा अग्रसेन जयंती का आयोजन देखते ही बनता है। लेकिन जब इन त्योहारों के बारे में नवयुवकों से बात होती है तो वे त्योहारों के पीछे के कुछ पहलुओं को तो जानते हैं परंतु उसके इतिहास और मनाने के कारण को ज्यादा नहीं जानते हैं। वे सिर्फ यही समझते हैं कि ये त्योहार सिर्फ खुशियों और छुट्टी का एक बहाना है।

आज का युवक कल का राष्ट्र निर्माता है। उसे अपने रीति-रिवाज व धनी परंपरा को बखूबी पहचानने की जरुरत है। मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि रीति रिवाज के बेड़ियों में उन्हें जकड़ा जाए, हम यह चाहते हैं कि रीति-रिवाज व त्योहार मनाते समय बस उसकी परंपरा व गौरव को ध्यान में रखा जाए।

आज इस विषम परिस्थिति में पता नहीं कल क्या होगा? जो आज के हालात हैं उससे उबरने की कोशिश हर स्तर पर जारी हैं।

भारत हर क्षेत्र में कामयाबी प्राप्त करने के लिए आतुर है। बस थोड़ा मौका मिले, थोड़ा प्रोत्साहन मिले तो आज का युवक उड़ान भरने के लिए तैयार है।

राम और कृष्ण के इस देश में लगता है स्वार्थ प्रबल हो गया है। राजनीति के दलदल में सिर्फ नेता ही नहीं फँसते जा रहे हैं, सामान्य जन भी इस दलदल की चपेट में आता जा रहा है। सत्ता की लालच ने चारों तरफ ऐसी परिस्थिति निर्माण कर दी है कि कोई किसी पर विश्वास करने के लायक ही नहीं बचा है। हर इंसान आज शक के घेरे से घिरा हुआ है।

इस माह में महाराजा अग्रसेन की जयंती है। महाराजा अग्रसेन हमेशा ही बुरी चीजों का विरोध करते रहे और अपने अनुआइयों को भी ऐसा करने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहे। सत्य की लड़ाई को ही अपने जीवन का आधार मानते थे। कहानियों में पढ़ा है कि राजा, प्रजा का हालचाल जानने के लिए रात को वेष बदलकर राज्य में जाते थे और जरुरतमंदों के जीवन में खुशियाँ बहाल करने के लिए रात दिन एक कर देते थे।

नवरात्रि में पूरे भारतवर्ष में अनेक रुपों में मनाई जाती है, सभी का मकसद होता है कि वह माँ दुर्गा की पूजा अर्चना करे और बुराइयों तथा परेशान से उबारने में उसकी मदद करें।

ऐसा लगता है कि हम जितना प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं उतना ही हम परेशानियों से घिरते जा रहे हैं। अब तो यह भी सोचकर डर लगता है कि आनेवाली पीढ़ी का जीवन कैसा होगा? हमारे संस्कार जो हमारी पहचान है उसे कैसे सहेजकर रख पाएंगे? हम सब को मिलकर इस ओर सोचना होगा और कम से कम अपने हृदय में परिवर्तन लाने की कोशिश करनी होगी। वर्तमान महामारी से लोगों को नए जीवन का दर्शन हुआ है वह आजीवन हमारे अंदर बना रहे यही सबसे आग्रह है।

आप सभी को महाराजा अग्रसेन जयंती, नवरात्रि व दशहरे की हार्दिक शुभकामनाएं।

एल.एस.यादव "लल्लन"
संपादक

MAHHIN/2015/67048
मुस्कान हिंदी मासिक पत्रिका ...एक एहसास

पत्रिका का सदस्य बने

वार्षिक : रु. 501/- (डाक सहित)
त्रैवार्षिक : रु. 1,500/- (डाक सहित)
पंचवर्षीय : रु. 2,100/- (डाकसहित)
आजीवन : रु. 5,100/- (डाक सहित)

अपना सदस्यता शुल्क कृपया इस बैंक खाते में भेजें :
Name : Muskan Ek Ehsas
Bank Details : Union Bank of India, Kandivali West Branch, Mumbai
Current A/C No. : 358201010050618
IFS Code : UBIN0535826

पत्र व्यवहार का पता: डी बी ओझोन, बिल्डिंग नं 15, फ्लैट नं. 1701, 17वीं मंजिल, दहिसर चेकनाका, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, ठाकुर मॉल के पास, मीरारोड (पूर्व), मुंबई- 401107
मो. 9833232327 ई-मेल: muskanekehsas@gmail.com

स्वच्छ भारत अभीयान २.० और मिशन अमृत महोत्सव की प्रधानमंत्री ने की शुरुआत

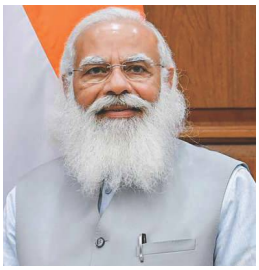

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में स्वच्छ भारत मिशन २.० और मिशन अमृत की शुरुआत की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अभियान का लक्ष्य शहरों को कचरा मुक्त बनाना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें ये याद रखना है कि स्वच्छता, एक दिन का, एक पखवाड़े का, एक साल का या कुछ लोगों का ही काम है, ऐसा नहीं है। स्वच्छता हर किसी का, हर दिन, हर पखवाड़े, हर साल, पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला महाअभियान है। स्वच्छता जीवनशैली है, स्वच्छता जीवन मंत्र है। हमारे सफाई मित्र, हर रोज झाड़ू उठाकर सड़कों को साफ करने वाले हमारे भाई-बहन, कूड़े की दुर्गंध को बर्दास्त करते हुए कचरा साफ करने वाले हमारे साथी, सच्चे अर्थों में इस अभियान के महानायक हैं। स्वच्छ भारत अभियान और अमृत मिशन की अब तक की यात्रा वाकई हर देशवासी को गर्व से भर देने वाली है। इसमें मिशन भी है, मान भी है, मर्यादा भी है, एक देश की महत्वाकांक्षा भी है और मातृभूमि के लिए अप्रतिम प्रेम भी है। पीएम मोदी ने कहा कि देश में शहरों के विकास के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल भी लगातार बढ़ रहा है। अभी अगस्त के महीने में ही देश ने नेशनल ऑटोमोबाइल स्क्रेपेज पॉलिसी लॉन्च की है। ये नई स्क्रैपिंग पॉलिसी, वेस्ट टू वेल्थ के अभियान को, सर्कुलर इकॉनॉमी को और मजबूती देती है। ये पॉलिसी देश के शहरों से प्रदूषण कम करने में भी बड़ी भूमिका निभाएगी। इसका सिद्धांत है- रियूज, रिसाइकल और रिकवरी। सरकार ने सड़कों के निर्माण में भी वेस्ट के उपयोग पर बहुत ज्यादा जोर दिया है।

उन्होंने कहा कि २०१४ के पहले के ७ वर्षों की बात करें, तो शहरी विकास मंत्रालय के लिए करीब सवा लाख करोड़ रुपये का ही बजट आवंटित था। हमारी सरकार के ७ वर्षों में शहरी विकास मंत्रालय के लिए करीब ४ लाख करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया गया। आज भारत हर दिन करीब एक लाख टन वेस्ट, प्रोसेस कर रहा है। २०१४ में जब देश ने अभियान शुरू किया था तब देश में हर दिन पैदा होने वाले वेस्ट का २० प्रतिशत से भी कम प्रोसेस होता था। आज हम करीब ७० प्रतिशत डेली वेस्ट प्रोसेस कर रहे हैं। अब हमें इसे १०० प्रतिशत तक लेकर जाना है।

अमरिंदर किसान विरोधी भाजपा के मददगार ना बनें-हरीश रावत

पंजाब प्रभारी हरीश रावत ने कैप्टन अमरिंदर सिंह को लेकर कहा कि पंजाब कांग्रेस द्वारा उनका अपमान करने की बातों में कोई सच्चाई नहीं है। रावत ने पंजाब कांग्रेस के घमासान के बीच कैप्टन अमरिंदर सिंह पर निशाना साधा। रावत ने कहा कि कैप्टन के हाल के बयान से ऐसा लगता है कि वे किसी दबाव में हैं तथा कैप्टन किसान विरोधी भाजपा के मददगार न बनें। ये समय सोनिया गांधी के साथ खड़े होने का है। रावत ने कहा कि इन रिपोर्टों को खारिज करते कहा कि कैप्टन अमरिंदर सिंह का पंजाब कांग्रेस द्वारा अपमान किया गया था। कांग्रेस ने जो किया, कैप्टन के लिए किया तथा विधायक दल की बैठक सोच-समझ कर बुलाई गई थी। कैप्टन ने कहा कि वे बैठक में नहीं आएंगे। कांग्रेस पार्टी ने अब तक जो कुछ किया है वह कैप्टन अमरिंदर सिंह के सम्मान के लिए और २०२२ विधानसभा चुनाव में पार्टी की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए किया है।

मनीष गुप्ता केस की जांच हाईकोर्ट जज की निगरानी में होनी चाहिए : अखिलेश यादव

उत्तरप्रदेश के गोरखपुर में हुए मनीष हत्याकांड को लेकर अब राजनीति गरमा गई है। कानपुर में राजनीतिक पार्टियों के नेताओं का आना-जाना शुरू हो गया है जिसके चलते आज गुरुवार को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव में पीड़ित परिवार से मुलाकात करने पहुंचे। इस दौरान मृतक मनीष गुप्ता की पत्नी ने अखिलेश यादव से न्याय दिलाने के लिए गुहार लगाई।

सपा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पीड़ित परिवार को समाजवादी पार्टी की ओर से २० लाख रुपए की मदद देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि मनीष के परिवार को सरकार २ करोड़ रुपए का मुआवजा दे, साथ ही मामले की जांच हाईकोर्ट के सिटिंग जज के नेतृत्व में हो और मनीष की पत्नी को सरकारी नौकरी दी जाए।

मृतक मनीष गुप्ता के परिजनों से मिलने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी पर जमकर निशाना साधा और पत्रकारों से कहा कि यूपी में बार-बार ऐसी घटनाएं हो रही हैं। ऐसी घटना की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। योगीराज में पुलिस रक्षा नहीं कर रही है बल्कि पुलिस हिरासत में सबसे ज्यादा मौतें हुई हैं। इस मामले में दोषी पुलिसकर्मियों को सख्त सजा मिले इसलिए केस की जांच हाईकोर्ट जज की निगरानी में होनी चाहिए।

बीजेपी पर हमला बोलते हुए अखिलेश ने कहा कि सरकार पुलिस से गलत काम करा रही है। इस मामले की गोरखपुर में निष्पक्ष जांच संभव नहीं है इसलिए कानपुर में जांच होनी चाहिए, वहीं पीड़ित परिवार ने सीबीआई जांच की मांग रखी है।

कोंकण में मानसून टूरिज्म और मुंबई में नाइट टूरिज्म शुरू किया जाएगा- आदित्य ठाकरे

महाराष्ट्र में कोरोना की वजह से चरमराई अर्थव्यवस्था को अब पर्यटन के जरिए सेहतमंद बनाने की तैयारी चल रही है। राज्य के पर्यटन् मंत्री आदित्य ठाकरे ने दैनिक भास्कर से खास बातचीत में यह बात कही। उन्होंने सूबे में महिलाओं के खिलाफ बढ़ रहे अपराध और मुंबई की जहरीली हो रही हवा की वजह से विदेशी पर्यटकों पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी खुलकर अपनी बात रखी। युके, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका जैसे देशों को बड़े पैमाने पर रेवेन्यू टूरिज्म सेक्टर से मिलता है। कोरोना महामारी का असर सिर्फ महाराष्ट्र पर नहीं बल्कि पूरे देश और पूरी दुनिया पर पड़ा है। अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के कई तरह के प्रयास चल रहे हैं, जिसमें टूरिज्म के माध्यम से रोजगार को बढ़ावा देने और रेवेन्यू जेनरेट करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन कोई नहीं जानता कि कोविड कब पूरी तरह से खत्म होगा। इसलिए मुश्किलें आ रही हैं।

पी चिदंबरम बोले- मैं असहाय और आहत महसूस कर रहा हूँ

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के भीतर की कलह आए दिन सतह पर आती रहती है, लेकिन कोई ठोस समाधान मिलता नहीं दिख रहा. पार्टी के सीनियर नेता सार्वजनिक रूप से बोल रहे हैं लेकिन शीर्ष नेतृत्व कोई क़दम उठाता नहीं दिख रहा। कोई नेता अनदेखी का आरोप लगा रहा है तो कोई ख़ुद को असहाय महसूस कर रहा है. अपने ही लोग पूछ रहे हैं कि बिना स्थायी अध्यक्ष के पार्टी कैसे चल रही है और कौन चला रहा है। पी चिदंबरम का रुतबा मनमोहन सिंह के दस सालों के कार्यकाल में किसी से छुपा नहीं है। उन्होंने अपने ट्वीट में लिखा है, 'जब हम पार्टी के भीतर कोई सार्थक बातचीत नहीं कर पाते हैं तो मैं बहुत ही असहाय महसूस करता हूँ. मैं तब भी आहत और असहाय महसूस करता हूँ जब एक सहकर्मी और सांसद के आवास के बाहर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के नारे लगाने वाली तस्वीरें देखता हूँ.''

उत्तर प्रदेश में भाजपा का बड़ा प्लान, चुनाव से पहले जाति आधारित २०० रैलियां कर सकती है

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव अगले साल की शुरुआत में होने हैं। २०१७ के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने कुल ४०३ विधानसभा सीटों में से ३२५ सीटें जीती थीं। सपा ने ५४, बसपा ने १९ सीटें जीती थीं। उत्तर प्रदेश में सत्ता पर फिर से काबिज होने के लिए बीजेपी कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहती है। फिलहाल थिंक टैंक की नजर ओबीसी वोटर्स पर है। यही वजह है कि सीएम योगी ने अपने मंत्रिमंडल में एससी, ओबीसी तबके से जुड़े २९ नेताओं को जगह दी है, लेकिन पार्टी एक कदम आगे जाकर इस समुदाय को रिझाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाएगी। इसके लिए सूबे में २०० रैलियां करने की योजना बनाई गई है। एक समाचार पत्र के अनुसार यूपी में ५० फीसदी से अधिक ओबीसी मतदाताओं की आबादी है, जिनमें यादव और अन्य ओबीसी जातियां हैं। यह ओबीसी समुदाय राज्य में सबसे प्रभावशाली समुदायों में से एक है। हालांकि भारतीय जनता पार्टी को पिछले चुनावों में इस ओबीसी समुदाय का समर्थन मिला था, लेकिन बीजेपी यह सुनिश्चित करना चाहती है कि ओबीसी समुदाय २०२२ के विधानसभा चुनावों में भी भाजपा का समर्थन करता रहे। इस समुदाय पर बीजेपी का ज्यादा फोकस इसलिए भी है, क्योंकि मायावती ब्राह्मण वोटरों में सेंधमारी की कोशिश में जुटी हुई हैं।

नई पार्टी बनाने जा रहे हैं कैप्टन अमरिंदर सिंह? कई बड़े नेताओं से संपर्क

पंजाब में मचे सियासी हलचल के बीच पंजाब प्रभारी हरीश रावत ने कहा कि, २-३ दिन से अमरिंदर सिंह के जो बयान आए हैं उससे लगता है कि वो किसी प्रकार के दबाव में हैं। पंजाब में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में राज्य की सियासी हलचल से कांग्रेस की परेशानी बढ़ने लगी है। पहले कैप्टन अमरिंदर सिंह का मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना, और फिर पंजाब कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू का पद छोड़ देना, ये सारा घटनाक्रम कांग्रेस के लिए मुसीबतें खड़ी कर चुका है। ऐसे में अब खबर सामने आ रही है कि आने वाले दिनों में कैप्टन अमरिंदर सिंह अपनी नई पार्टी बना सकते हैं। हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के बाद अमरिंदर सिंह साफ कर चुके हैं कि वो भाजपा में नहीं जा रहे हैं और ना ही कांग्रेस में हैं। वहीं सूत्रों का कहना है कि, कांग्रेस के लगभग दर्जनभर नेता और कुछ किसान नेता भी कैप्टन अमरिंदर सिंह के संपर्क में हैं। माना जा रहा है कि अमरिंदर सिंह नई पार्टी का गठन कर सकते हैं। जाता है कि २०१७ में हुए पंजाब विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत में कैप्टन अमरिंदर सिंह की भूमिका अहम थी। लेकिन २०२२ में होने वाले चुनाव से पहले ही कैप्टन ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया है, और पार्टी भी दो धड़ों में बंटी नजर आ रही है। वहीं अगर नई पार्टी के साथ अमरिंदर सिंह ने भी ताल ठोक दी, तो संभव है कि कांग्रेस को आगामी विधानसभा चुनाव में भारी नुकसान झेलना पड़े।

दो लैपटॉप ले जाने के मामले में एयरपोर्ट पर रोक दिए गए तमिलनाडु के वित्त मंत्री

दो लैपटॉप रखने के कारण तमिलनाडु के वित्त मंत्री को चेन्नई एयरपोर्ट पर रोक दिया गया। जिसके बाद सीनियर अधिकारी मौके पर पहुंचे और इसे मिस कम्युनिकेशन का मामला बताया। सीनियर अधिकारियों ने इस असुविधा के लिए वित्त मंत्री से माफी भी मांगी। तमिलनाडु के वित्त मंत्री को एयरपोर्ट पर इस वजह से रोक दिया गया क्योंकि उनके पास दो लैपटॉप थे। सीआईएसएफ कर्मियों के द्वारा रोके जाने के बाद जब अधिकारियों को ये बात पता चली तो उन्हें वित्त मंत्री से माफी मांगनी पड़ गई। तमिलनाडु के वित्त मंत्री पलानीवेल त्यागराजन को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के एक अधिकारी ने चेन्नई हवाई अड्डे पर दो लैपटॉप रखने के कारण रोक लिया। जिसके बाद वहां विवाद खड़ा हो गया। वित्त मंत्री थूथुकुडी जा रहे थे। इसी दौरान उन्होंने डोमेस्टिक टर्मिनल पर स्कैनिंग के लिए अपना बैग मशीन में डाला, जहां उन्हें लैपटॉप के कारण रोक लिया गया। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारी ने कथित तौर पर वित्त मंत्री से कहा कि एक यात्री दो लैपटॉप नहीं ले जा सकता है। विवाद जब बढ़ा तो बताया गया कि ऐसा कोई नियम ही नहीं है। हालांकि, जब मंत्री त्यागराजन की पहचान सामने आई तो हवाईअड्डे के सीनियर अधिकारी मौके पर पहुंचे और उन्होंने वित्त मंत्री से माफी मांगी। ये बात भी सामने आई है कि ये मामला मिस कम्युनिकेशन के कारण भी हो सकता है।

महाराज अग्रसेन युग प्रवर्तक

प्राचीन भारत में अनेकों गणराज्य, जनपद व महाजनपद हुए थे। ये गणराज्य अपनी प्रसिद्धि की चरम सीमा पर पहुंचकर पतन के गर्त में समा गए। जो गणराज्य पहले विशाल भूभाग पर फैले थे अब छोटे-छोटे गावों में सिमटकर रह गए। ऐसा ही एक वैभवशाली गणराज्य था "आग्रेय"।

महाराजा अग्रसेन इसी जनपद के राजा थे। प्रतापनगर के राजा वल्लभ और माता भगवती के यहाँ सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल में उनके बड़े पुत्र के रुप में जन्में। प्रतापनगर वर्तमान राजस्थान एवम् हरियाणा के बीच सरस्वती नदी के किनारे स्थित था। उनके जन्म के समय ही गर्ग ऋषि ने कहा था ये एक नई शासन व्यवस्था को जन्म देनेवाले महान शासक बनेंगे, जिसे युगों युगों तक याद रखा जाएगा। बालक अग्रसेन को मुनि तांडेय के आश्रम में भेजा जाता है जहाँ से वे अच्छे शासक बनने का गुण पाकर निकले। क्षत्रिय कुल में पैदा होने पर भी उन्हें हिंसा से घोर नफरत थी इसलिए उन्होंने वानिका धर्म अपना लिया।

महाराजा अग्रसेन द्वापर के अंतिम चरण में महाभारत युद्ध के समय श्री कृष्ण के समकालीन थे और पांडवों के पक्ष में युद्ध में भाग भी लिया था। श्रीराम के पुत्र कुश की ३४वि पीढ़ी में पैदा हुए थे। इनका विवाह नागराज कन्या माधवी से हुआ था। माधवी के लिए स्वयंवर रखा गया था जिसमें इंद्र भी उपस्थित थे मगर माधवी ने इंद्र को न चुनकर अग्रसेन जी को वरमाला पहनायी, जिसे इंद्र ने अपना अपमान समझकर प्रतापनगर में अकाल की स्थिति पैदा कर दी। महाराज अग्रसेन ने इस संकट को दूर करने के लिए देवी लक्ष्मी की आराधना की। लक्ष्मी जी ने प्रसन्न होकर कहा कि यदि तुम कोल्हापुर के राजा नागराज मनोरथ की पुत्री का वरण कर लो तो उनकी शक्तियाँ भी तुम्हें प्राप्त हो जाएंगी। इस तरफ राजकुमारी सुंदरवती से विवाह कर उन्होंने प्रतापनगर को संकट से बचाया। दो-दो नागवंशों से संबंध होने के कारण अपार सुख समृद्धि की वृद्धि हुई। इसी कारण अग्रवाल समाज नागों को अपना मामा मानते हैं। अपने नये राज्य की स्थापना के लिए भ्रमण के समय उन्होंने देखा कि एक शेरनी शावक को जन्म दे रही थी। महाराज के हाथी को अपनी मां के लिए खतरा समझ कर शावक ने हाथी पर छलांग लगा दी। इसे दैवीय संदेश समझ ज्योतिषियों की सलाह पर वहाँ नए राज्य की स्थापना की जिसका नाम "आग्रेयगण"रखा गया। जिस स्थान पर शावक का जन्म हुआ उस स्थान को अग्रोहा नाम दिया गया। आज के हरियाणा के हिसार के पास जिसे अग्रवाल समाज के पाँचवें धाम के रुप में माना जाता है। अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने अग्रवाल समाज के लिए अनेक सुंदर मंदिर एवं धर्मशालाएं वहाँ बनवा दी है।

महर्ष गर्ग ने अग्रसेन महाराज से १८ यज्ञ कराने का संकल्प कराया। प्रथम यज्ञ के पुरोहित स्वयं ऋषि गर्ग बने। उन्होंने सबसे बड़े राजकुमार विभु को दीक्षित कर गर्ग गोत्र से मंत्रित किया। १८ गणपतियों के नाम पर साढ़े सतरह गोत्र बनाए गए गर्ग, गोयल, गोयन, बंसल,सिंघल, मंगल, जिंदल, तिंगल, एरण, धारण, मंदल, बिंदल, मित्तल, कच्छल, तायल, मधुकुल इस तरह १७ यज्ञ पूर्ण हो चुके थे। १८वें यज्ञ के समय एक घोड़े की बलि देते समय उसे तड़पता देख महाराज ने यज्ञ बीच में ही रोक दिया और घोषणा करवा दी कि भविष्य में मेरे राज्य में कोई भी व्यक्ति न मांस खाएगा न बलि देगा। यज्ञाचार्यों के लाख कहने पर भी कि बलि न देने पर यज्ञ अधूरा रह जाएगा वह नहीं माने और कहा कि हर व्यक्ति प्राणीमात्र का रक्षक बनेगा।

एक बार अग्रोहा में अकाल पड़ा। महाराज वेश बदलकर भ्रमण कर रहे थे उन्होंने देखा एक परिवार में ४ लोगों का भोजन बना था, पाँचवा अतिथि आ गया तो सबने अपनी अपनी थाली से थोड़ा-थोड़ा भोजन निकाल कर पांचवीं थाली परोस दी। इस घटना से प्रेरित होकर उन्होंने अपने राज्य में एक ईंट, एक रुपया की प्रथा शुरु कर दी। बाहर से जो भी आए ईंटों से घर बनाए और रुपए से व्यापार शुरु करे। इस तरह वह समाजवाद के प्रणेता बने।

पहले विवाह निकट संबंधों में ही हो जाता था। विज्ञान के अनुसार यह अनुचित था। अग्रसेन जी ने सर्व-सम्मति से निर्णय लिया कि विवाह सगोत्र में नहीं होगा। आज भी अग्रवालों में यह प्रथा है।

महाराज अग्रसेन के नाम पर भारत ने २४ सितंबर १९७६ में २५ पैसे का डाक टिकट जारी किया। १९९५ में दक्षिण कोरिया से एक तेल वाहक जहाज खरीदा जिसका नाम सरकार ने महाराजा अग्रसेन रखा।

राष्ट्रीय राजमार्ग १० का अधिकारिक नाम महाराजा अग्रसेन के नाम पर है। इनके नाम की बावड़ी दिल्ली में है। महाराज अग्रसेन और उनके १८ गणपतियों के नाम से बना सरबार जिसकी लागत ३० लाख रुपये थी चंदीगढ़ के सेक्टर ३१ में स्थित है।

महाराजा अग्रसेन का जन्मदिन आश्विन शुक्ल एकम अर्थात नवरात्र के प्रथम दिन मनाया जाता है। धूमदाम से शोभायात्रा निकाली जाती है।

अग्रवाल ध्वज-गान

झण्डा लहर-लहर लहराए, अग्रवंश की कीर्ति सुनाए।
केसरिया रंग बहुत सुहाए, त्याग- भाव का पाठ पढ़ाए।
सहानुभति व प्रेम त्याग को, हम सब जीवन में अपनाएँ।
अठारह किरणों का गोला, गोत्रों की बोली है बोला।
राज व्यवस्था को बतलाकर, अग्रसेन की याद दिलाए।
एक रुपया संग ईंट जड़ी है, इसमें समता बहुत बड़ी है।
समाजवाद की यही कड़ी है, अग्रोहा की याद दिलाए।
उपर नीचे कूल बने है, मिले बीच अनुकूल घने हैं।
ऊँच नीच का भेद मिटाकर, समता हम जीवन में लाए।
झण्डा लहर-लहर लहराए, अग्रवंश की कीर्ति सुनाए।

ओंकार चौधरी
गोरेगांव, मुंबई

साफ और चमकते
हुए चेहरे के लिए हल्दी

वैद्य डॉ. अरूण शास्त्री
B.E.M.S., D.N.Y.S., A.V.V.R., G.E.M.P. (N.D.)
M. 9870033089

आप सेहत के लिए हल्दी के अनगिनत फायदों के बारे में ज़रूर जानते होंगे। ये किचन में मौजूद उन औषधियों में से है, जिसका उपयोग सदियों से आयुर्वेद में भी होता आया है। सेहत के साथ-साथ हलदी का उपयोग खूबसूरत त्वचा पाने के लिए भी किया जाता है। खासतौर पर भारत में, शादी से पहले दुल्हन और दुल्हे को हल्दी लगाई जाती है, ताकि वे उनकी त्वचा में ग्लो आए। इसके अलावा भी हल्दी त्वचा को कई तरह के फायदे पहुंचाती है। आइए जानें हल्दी के बेमिसाल फायदों के बारे में।

१. त्वचा से जुड़ी दिक्कतों को दूर करती है

जैसा कि आप जानते हैं कि हल्दी का फायदा उसमें मौजूद प्राकृतिक घटक करक्यूमिन से आता है। करक्यूमिन, प्रतिरक्षा प्रणाली में विशिष्ट उत्तेजनाओं को दबा देता है। सूजन, सोरायसिस और एक्जिमा जैसी त्वचा के इंफेक्शन में लाभदायक साबित होता है।

२. घाव को जल्दी भरती है

हल्दी में ऑक्सीकरण और तनाव प्रतिक्रिया को कम करने का एक बड़ा गुण है। ये दोनों गुण आपके शरीर पर किसी भी घाव को तेज गति से ठीक करने में मदद कर सकते हैं। आप बस घाव के ऊपर थोड़ी हल्दी डालकर उसे हल्के से दबा सकते हैं।

३. झुर्रियों को कम करती है

हल्दी उन मुक्त कण को दबाने में सक्षम होता है, जो उम्र बढ़ाने का कारण बनते हैं। साथ ही ये त्वचा में कोलेजन और नमी के स्तर को बनाए रखती हैं। इसका मतलब हल्दी त्वचा की झुर्रियों को कम करने में मदद करती है।

४. सूरज की किरणों के नुकसान को कम करती है

शोध में पता चला है कि हल्दी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट गुण, सूरज की किरणों से होने वाले नुकसान को भी कम करने में कारगर साबित होते हैं। यही वजह है कि गर्मी से होने वाले रेशैज़ और जलन पर हल्दी का पेस्ट लगाने से ठंडक और राहत महसूस होती है।

५. गहरे दाग़ और धब्बों से लड़ती है

हल्दी त्वचा को शुद्ध कर उसमें जान भरती है। साथ ही इसमें मौजूद खास गुण त्वचा पर एक्ने और इंफेक्शन से लड़ते हैं। हल्दी खासकर उन लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिनकी त्वचा नाज़ुक होती है। हल्दी में मौजूद करक्यूमिन गहरे दाग़, हापरपिगमेंटेशन और सूरज क किरणों से हुए नुकसान को ठीक करती है।

मुंह की बदबू से मिल सकता है छुटकारा

नींबू को निचोड़कर उसका रस निकालें और एक चुटकी नमक के साथ, इसे एक गिलास पानी में घोल लें। अब इस घोल को आप चाहें तो इसका सेवन कर सकते हैं या फिर मुंह की बदबू को दूर करने के लिए आप इस पानी से कुल्ला भी कर सकते हैं। इससे मुंह से आने वाली दुर्गंध को दूर करने में काफी मदद मिलेगी।

बालों को रोकने के उपाय

आयुर्वेद और ब्यूटी इंडस्ट्री में एलोवेरा का बहुत महत्व है। एलोवेरा में चमत्कारिक गुण होते हैं जो स्कैल्प को स्वस्थ रखते हैं और बाल झड़ने से रोकते हैं। थोड़ा सा एलोवेरा जेल लें और उसे स्कैल्प पर लगाकर कुछ घंटों के लिए छोड़ दें। इसके बाद बालों को धो लें। प्रेगनेंसी के दौरान और डिलीवरी के बाद झड़ते बालों को रोकने का यह आसान नुस्खा है। दही भी बालों के लिए कंडीश्नर का काम करती है। दही कई तरफ के विटामिनों से भरपूर होती है जो बालों को स्वस्थ, मुलायम और डैंड्रफ से दूर रखती है। स्कैल्प पर दही लगाकर १० मिनट के लिए छोड़ दें। १० मिनट के बाद बालों को पानी से धो लें। दही को डायट में शामिल करने से भी बाल घने होते हैं और इम्युनिटी भी बढ़ती है।

खाँसी का घरेलू इलाज

शहद : दो चम्मच शहद में एक चम्मच नींबू या अदरक का रस मिलाकर दिन में दो से तीन बार पिएँ।

अदरक : पानी में तीन चम्मच बारीक कटा अदरक और एक चम्मच सूखा पुदीना डालकर उबालें। ठंडा होने के बाद इसमें शहद मिलाएँ। अब इस मिश्रण को रोज एक चम्मच पिएँ।

काली मिर्च : एक कप पानी में एक चम्मच काली मिर्च पाउडर और दो चम्मच शहद मिलाएँ रोज एक से दो बार इसे चाय की तरह पिएँ।

हल्दी : दूध में हल्दी पाउडर मिलाकर रोज दिन में या रात में इसका सेवन करें।

गुड़ : गुड़ को पीस उसमें प्याज के छोटे टुकड़े मिलाएँ और रोज दो से तीन बार खाएँ।

साधु का हठ

धनदत्त नामक सेठके घर एक साधु पहुंचा। सेठ उसे एक मुट्ठी अन्न देने लगा तो उसने अस्वीकार कर दिया। झुंझला कर सेठ बोला, अन्न नहीं लेता, तब क्या मनुष्य लेगा ?

साधु को सेठ की यह बात चुभ गई। उसने कहा, हां, अब तो मनुष्य ही लूंगा और ले कर ही हटूंगा। वह अन्न-जल छोड़ कर सेठ के द्वार पर बैठ गया। सेठ ने उसे बहुत सारा धन और अन्न देना चाहा, किंतु साधु अपनी हठ पर अड़ा ही रहा।

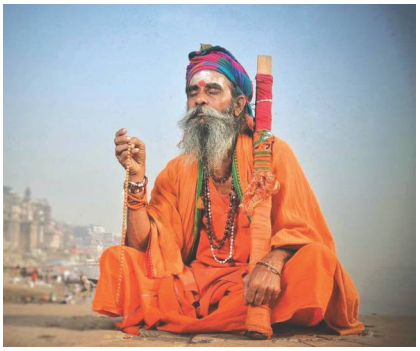

सेठ की चिंता बढ़ी, इसका तो समाधान निकालना ही होगा। वह राजा के दो-चार दरबारियों से मिला। सबने कहा, मरने दो उस मूर्ख को। सेठ लौट आया, पर चिंता नहीं खत्म हुई। अभी तो दरबारी कह रहे हैं कि मरने दो, पर यदि वह सचमुच मर गया तो वे मेरी रक्षा करेंगे या नहीं ? यह भी देख लेना चाहिए। यही सोचकर वह शहर कोतवाल के पास गया और बोला, 'भिक्षुक मर गया।"

कोतवाल चौंक पड़ा। कहने लगा, सेठ जी ! यह तो बुरा हुआ। आपको उसे किसी प्रकार मना लेना था। यह मृत्यु आपके द्वार पर हुई है। नियमानुसार इसकी जांच होगी। और यदि उसमें आप निमित्त सिद्ध होंगे तो पता नहीं आपको क्या दंड मिले। मेरा कर्त्तव्य है इस कांड की सूचना राजा को देना। आप मुझे क्षमा करें। सरकारी कर्मचारी होने से मैं आपको कोई सलाह नहीं दे सकता।

सेठ ने कहा, धन्यवाद ! मैं तो आप लोगों को परख रहा था। भिखारी जीवित है और अब मैं उसे मरने नहीं दूंगा।

घर लौट कर उसने गंभीरता से सोच-विचार किया। फिर स्वयं ही साधु के सामने खड़ा हो कर बोला, तुम्हें मनुष्य ही लेना है न ? मुझे ले चलो।

भिक्षुक उठ खड़ा हुआ।वह बोला, आप मुझसे श्रेष्ठ हैं। मैं अपनी बात सत्य करने को अड़ा था, जिस क्षण आपको उसका बोध हो गया, उसी क्षण मेरी मांग पूरी हो गई। भगवान आपका मंगल करें। आशीर्वाद देता हुआ साधु वहां से चला गया। पर सेठ को दान के अहंकार से होने वाले नुकसान का ज्ञान हो गया।

प्रस्तुति - श्रीमती सुनीता अग्रवाल
मुंबई

महाराजा अग्रसेन का संक्षिप्त परिचय

जेमिनी ऋषि के अनुसार हरियाणा प्रांत सरस्वती, इषदवती और घग्घर नदी के संगम पर एक छोटा सा प्रताप नगर का राज्य था जिसके राजा का नाम वल्लभसेन था। वल्लभसेन की महारानी का नाम भगवती देवी था। बल्लभसेन के पिता का नाम वृहतसेन था जिसका उल्लेख महाभारत में भी आया है। प्रतापनगर २० गांवों का एक छोटा सा राज्य था। बल्लभसेन के छोटे भाई का नाम कुंदसेन था। केशी उनके सेनापति का नाम था। दुर्भाग्य से बल्लभसेन के कोई पुत्र न था। छोटे भाई कुंदसेन का पुत्र एक वर्ष का हो चुका था। प्रजा ने श्री बल्लभ से दूसरा विवाह करने का आग्रह किया किंतु सूर्यवंशी क्षत्रिय एक पत्नीधारी हैं। एक पत्नी के होते हुए दूसरे विवाह के बारे में सोचना भी पाप मानते थे। इसलिए राजा वल्लभ ने दूसरा विवाह करने से साफ मना कर दिया। कुंदसेन को भाई के इस विचार से बड़ी खुशी हुई कि निकट भविष्य में उनका ही पुत्र राजा बनेगा। परंतु विधाता को कुछ और मंजूर था। राजा वल्लभ और विदर्भ की कन्या भगवती देवी ने मिलकर शिवजी की आराधना की।

शिवजी ने उनकी प्रार्थना से खुश होकर वरदान दिया कि तुम्हारे दो पुत्र होंगे। कालांतर में अग्रसेन जी का जन्म आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि के दिन बारह बजे महेंद्रकाल में हुआ। महेंद्रकाल के विषय में कहा जाता है कि इस काल में जन्मा बालक बहुत भाग्यवान शस्त्र शास्त्र में निपुण, धन्य धान्य व दैविक शक्तियों से परिपूर्ण होता है। इनके जन्म से प्रजा में खुशी की लहर फैल गई। चारों ओर प्रजा उन्मुक्त होकर नाच, गाकर अपनी खुशियाँ प्रकट कर रही थी। लेकिन यह खुशी चाचा कुंदसेन व उनके पुत्रों को रास नहीं आई। अग्रसेन जी के जन्म से उनके सपनों पर पानी जो फिर गया था।

अग्रसेन धीरे-धीरे बड़े होने लगे। अब गुरु के आश्रम में शिक्षा दीक्षा के लिए तैयारी होने लगी। उनकी शिक्षा उज्जैन में आगर नगर में संदीपन ऋषी के आश्रम के पास तांडव्य ऋषि के आश्रम में संपन्न हुई। १४ वर्ष की अल्पायु में गुरु के आश्रम से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा लेकर राजमहल वापस लौटे।

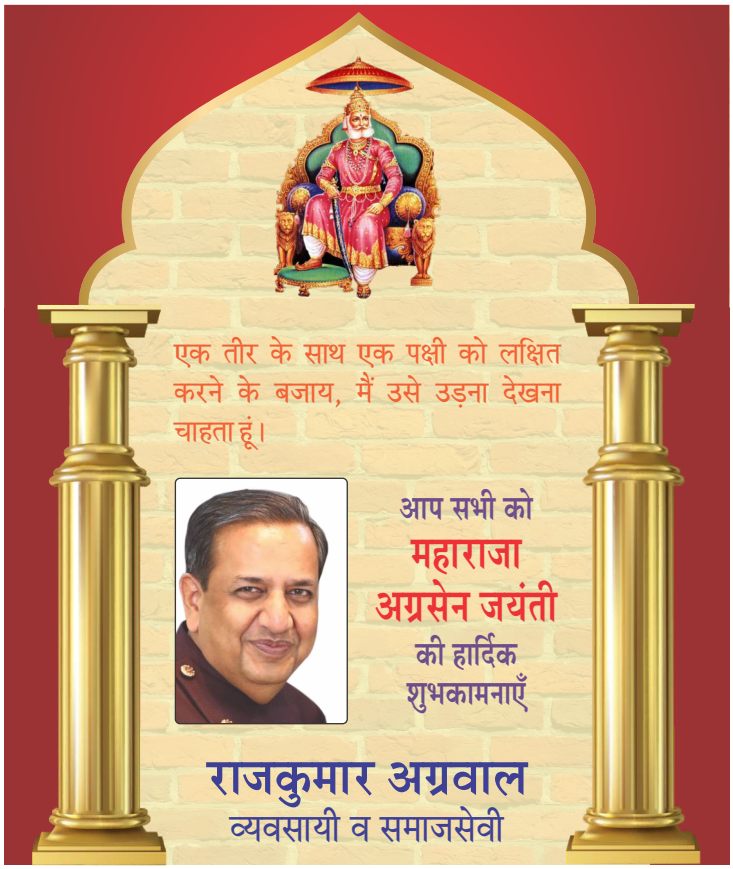

रिश्ते होते हैं खुशनुमा

जब वक्त बहुत कम रहता है तो रिश्ते प्रभावित होने लगते हैं। पर ऐसा कभी होना नहीं चाहिए, क्योंकि आपकी सफलता के पीछे इन्हीं लोगों का हाथ है।

खुशियों भरी जिंदगी वही होती है, जहां सारे रिश्ते खुशनुमा होते हैं। अगर आपके पास जिंदगी की सारी खुशियां हैं, पर उन खुशियों को बांटने के लिए कोई नहीं तो फिर ऐसी खुशी का क्या फायदा! पौधों की तरह ही रिश्तों की ताजगी बरकरार रखने के लिए उनकी नियमित देखभाल जरूरी होती है। यह देखभाल, अपनों के लिए वक्त निकाले बिना संभव नहीं। माना कि आप बेहद व्यस्त जिंदगी जीती हैं। आठ घंटे की नींद लिए अरसा बीत गया है। आपके पास अपनी जरूरतों के लिए भी वक्त नहीं है। इन सब कारणों के बावजूद अगर आप खुशनुमा जिंदगी जीना चाहती हैं तो आपको अपने परिवार और दोस्तों के लिए वक्त निकालने की कला सीखनी ही होगी।

सुबह जल्दी उठें : जब आप सुबह जल्दी उठती हैं तो आपके पास काम करने और दूसरों के साथ बात करने का अधिक वक्त मिल जाता है। वीकएंड में दोपहर तक सोते रहने के बजाय आप अपने दिन की शुरुआत अपने घर के सदस्यों के साथ कुछ वक्त बिताकर कर सकती हैं। अपने परिवार के साथ सुबह-सुबह कुछ वक्त बिताकर आप न सिर्फ दिन भर की चुनौतियों के लिए खुद को बेहतर तरीके से तैयार कर पाएंगी, बल्कि यह भी जान पाएंगी कि उन लोगों की जिंदगी में आजकल क्या हो रहा है।

अच्छे वक्त बिना, न गुजरे कोई दिन : अपनी मां को फोन बाद में कर लूंगी। जिंदगी और रिश्तों के प्रति अगर आपका यह रवैया है तो इसे जल्द-से-जल्द बदल डालें। यदि आपके पास अभी वक्त है, तो उसका इस्तेमाल अपने रिश्ते को रिफ्रेश करने में करें। आपको अंदाजा नहीं है कि आपके इस प्रयास का आपकी जिंदगी पर कितना अच्छा असर पड़ेगा। हमेशा आपका कोई दोस्त आपसे यह पूछता है कि हम कब मिल रहे हैं, तो फुर्सत मिलने के साथ ही उसके साथ डिनर का कार्यक्रम बनाएं। खासतौर पर दोस्तों के साथ इस मेल-मुलाकात को टालते न रहें, क्योंकि हो सकता है कि अपने इस रवैये के कारण आप अपने दोस्तों के लिए कभी वक्त निकाल ही न पाएं।

ऑफिस का काम न लाएं घर : अपने परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ ज्यादा वक्त नहीं बिता पाने का एक और कारण है कि ऑफिस का काम घर लाना। हालांकि कई बार यह बहुत जरूरी हो जाता है। लेकिन यदि आप ऑफिस में ही यथासंभव अपना काम निपटा देती हैं तो घर पर आपको ज्यादा से ज्यादा खाली वक्त मिल जाएगा। अगर आप यह तय कर लें कि ऑफिस का काम घर नहीं लाना है तो सच में आप अपने लक्ष्य को हासिल कर पाएंगी। बस, तय करने भर की जरूरत है।

काम में हाथ बंटाएं : अपनी दुनिया में सिमटने के बजाय जब आप काम में उलझी रहें तो परिजनों को भी हाथ बंटाने की इजाजत दें। अपने करीबी लोगों को भी जब हम अपना काम करने का मौका देते हैं तो उन्हें लगता है कि वे हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा हैं। ठीक इसी तरह जरूरत पड़ने पर उनके काम में भी हाथ बटाएं। आप अपने परिवार का खयाल रखती हैं, यह जताने के लिए यह एक अच्छा तरीका है।

सोते वक्त साथ समय बिताएं : रात में जब पूरा परिवार काम कर रहा हो, उस समय ऑफिस का काम करने से भले ही ऑफिस में आपको जल्दी प्रमोशन मिल जाए, पर इससे जीवनसाथी के साथ आपका संबंध प्रभावित हो सकता है। यदि आप अभिभावक हैं और बच्चों के सोने के बाद घर आती हैं तो धीरे-धीरे बच्चे आपसे दूर होने लगेंगे। ऐसे ही यदि आप अपने जीवनसाथी के सोने के बाद ऑफिसे से घर लौटती हैं, तो धीरे-धीरे आप दोनों के बीच का रिश्ता कमजोर हो सकता है। परिवार के सोने से पहले घर पहुंचने से आपकी सोच से कहीं ज्यादा आपके रिश्तों की मधुरता बढ़ सकती है। रिश्ते की मधुरता के लिए आपकी उपस्थिति काफी मायने रखती है।

प्रस्तुति- श्रीमती उषा देवड़ा
मुंबई

महाराजा अग्रसेन के समय शैक्षणिक उनति

शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने अभूतपूर्व क्रांतिकारी कदम उठाए। सभी वर्ण, सभी वर्ग के लिए शिक्षा अनिवार्य थी। शिक्षा के साथ-साथ कला, साहित्य, औद्योगिकी विकास की ओर भी उन्होंने पूरा-पूरा ध्यान दिया। उनके राज्य में धर्म और संस्कृति को जीवन का अनिवार्य अंग माना गया। सभी अपने अपने धर्म का पालन करते हुए, समानरुप से शासन के सहयोगी बनें, यह उनके दैनिक जीवन का मूल मंत्र था। हजारों वर्ष बाद आज भी अग्रवाल समाज में यही धर्म और संस्कृति, दान-पुण्य, परस्पर मिल बांट खाने की प्रथा अग्रसेन जी की विरासत के रुप में विद्यमान है। यही कारण है कि आज भी इस जाति ने अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए व विकास करने में हर क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। शासकीय सेवाएँ, शिक्षा, कला, विज्ञान, साहित्य, अभियंत्रिकी, मिलिट्री, राजनीति के क्षेत्र में हर जगह अग्रवाल सपूत अपनी सेवाएं दे रहे हैं। सामाजिक सेवा तथा धार्मिक अनुष्ठानों में क्षेत्र में तो अग्रवाल समाज सदा अग्रणी रहा है। इस जाति ने कभी शासन से कोई अपेक्षा नहीं की। यह तो केवल सेवा में लगी रही है, सेवा ही जीवनोद्देश बन गया है।

एक रुपया, एक ईंट

अग्रसेन जी के राज्य में एक लाख परिवार बसते थे। उनमें से कोई भी यदि दैवीय विपत्ति का शिकार हो जाता था तो समस्त राज्य के परिवार उसको एक रुपया और एक ईंट स्वेच्छा से देते थे ओर परिवार पुन: अपनी स्थिति को प्राप्त कर लेता था। समाजवाद का ऐसा अदभुत उदाहरण अन्य किसी राज्य में न देखा गया न सुना गया। बाहर से आए हुए नए परिवार भी इसी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त करने के अधिकारी थे।

रिलेशनशिप की कुछ बातें

हर किसी की जिंदगी में प्यार के अपने ही मायने होते हैं। इस मॉडर्न जमाने में यंगस्टर्स मां-बाप की मर्जी की बजाए खुद की पसंद को ज्यादा करते हैं। अगर आप भी प्यार में पड़े तो उसके लिए कुछ बातों पर गौर करने की जरूरत है क्योंकि अगर इन बातों का ध्यान न रखा जाए तो रिश्ता टूटने की कगार पर पहुंच जाता है।

- अगर आप नए-नए प्यार में पड़े हैं तो शो ऑफ करने से बचें क्योंकि हो सकता हैं कि आपके पार्टनर को यह सब कुछ अच्छा न लगें और वह असहज महसूस करे।
- 'किस' जैसी निजी बातें आप अपने बीच ही सीमित रखें। दोस्तों को बता कर शेखी बघारने की जरूरत नहीं है क्योंकि बाद में इस बात लेकर कई मुश्किलें खड़ी हो सकती है।
- अपने बीच किसी को कबाब की हड्डी न बनने दें लेकिन आप खुद भी हर टाइम अपने पार्टनर न चिपके रहें।
- पार्टनर को मां-बाप से मिलवाने की हड़बड़ी न मचाएं और न ही अभी से बच्चों के नाम रखने की बातें न करें।
- पार्टनर के दोस्तों से भी फ्रैंडशिप करें। उन्हें अच्छा लगेगा।
- उनसे अपनी जिंदगी की अहम बातों को शेयर करते रहे वरना अगर उन्हें बाद में पता चला तो मुसीबत खड़ी हो सकती है।
- छोटी-मोटी बातों को नजरअंदाज करें न ही तो दोनों में लड़ाई-झगड़े होंगे।
- अपने नए नए साथी से पहेलियां सुलझाने की उम्मीद न करिए और खुद ही मन का बात बता दीजिए।

क्यों टूटता है रिश्तों का बंधन

यह बात को भी अच्छी तरह से पता होगी कि एक अच्छे रिश्ते की शुरूआत आपसी तालमेल और समझदारी पर ही टिकी होती है। जलन-ईर्ष्या और अपने साथी से जरूरत से ज्यादा उम्मीदें रखना आपके रिश्ते को खराब ही करती हैं। अगर यहीं चीजें जरूरत से ज्यादा बढ़ जाए तो रिलेशनशिप का अंत होना तय ही हो जाता है।

आज हम बात की लड़कियों की ही आदतों की करते हैं, जिनकी वजह से बेक्रअप होता है हालांकि इसके बारे में खुद उन्हें भी नहीं पता होता और जब उन्हें इस बात की समझ होती हैं तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

१. इनसिक्युरिटी होना

पार्टनर में आपसी विश्वास की डोर होना बहुत जरूरी है। अगर आप उन्हें शक की निगाह से देखती है बार बार उनका फोन चेक करती है। फेसबुक पर उनकी पोस्ट्स के अलग मतलब निकालती है तो आपके रिलेशन में दरार आना तय है। आपकी इन बातों से पता चलता है कि आप कितनी इनसिक्योर हैं और आपमें रिश्ते संभालने की समझदारी नहीं है।

२. उन्हें बदलने की कोशिश

अगर आप उनको बदलना ही चाहती हैं तो आपने उनसे प्यार कैसे किया ? इस बात को अच्छी तरह से समझ ले कि उन्हें बिलकुल पसंद नहीं है कि कोई उन्हें अपने हिसाब से ढाल ले। वह अपनी आदतों को बदलना नहीं चाहते।

३. जेंडर का अंतर नहीं समझतीं

आपने किसी खास मौके के लिए कोई स्पेशल प्लानिंग की थी लेकिन समझ न पाने की वजह से उन्होंने आपका साथ नहीं दिया। आपको उम्मीद थी कि आपके बनाए खाने पर उनकी ओर से कोई खास रिएक्शन आएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इससे आपका मूड ऑफ और झगड़ा शुरू... हालांकि उसे यह समझ में नहीं आएगा कि गड़बड़ कहां है। यहां आपको समझने की जरूरत है कि वह आपसे अलग हैं और हर मामले में आपकी सोच नहीं पकड़ सकते। आप जितनी जल्दी इस बात को समझ लेंगी, रिश्ते को लेकर आपकी कई परेशानियां उतनी ही सहजता से सुलझ जाएंगी।

४. हमेशा मुंह बनाए रखना

आप उनकी छोटी छोटी बातों को नजरअंदाज नहीं कर पाती हैं और उन्हें बात बात पर ताना देती रहती हैं। अगर वह कुछ नया भी करते हैं तो तारीफ करने की बजाए पुरानी बातों पर मुंह फुला लेती हैं। अब आप ही सोचें कि इस पर उनको कैसा लगता होगा ?

अपनी तारीफ सुनना सभी को पसंद होता है और इससे रिलेशन में मिठास भी रहती है। लिहाजा उनकी कमियों को गिनते रहने की बजाए उसके अच्छे प्रयासों को दिल से स्वीकारें और इसके लिए तारीफ भी करें।

५. सोशल लाइफ खत्म कर देना

शादी के बाद लड़कियां ज्यादातर दोस्तों से किनारा कर लेती हैं। वह सिर्फ पार्टनर के बारे में ही सोचती है। फिर थोड़ी देर में ही मेसेज और कॉल की उम्मीद करती हैं जब पार्टनर से किसी तरह का रिस्पान्स नहीं आता तो वह जल्दी ही परेशान हो जाती हैं। ऐसे में उन्हें अपना सर्कल मेंटेन की करने की जरूरत है। इस तरह से आपकी दिलचस्पी भी बरकरार रहेगी और आप बिजी भी रहेगी।

गीत :

संजीव निगम
मलाड पूर्व, मुंबई

थके पंख, प्रफुल्लित मन ,
लौट कर घर आयेंगे।
अपने हिस्से की डाल पर
बैठ चहचाहएँगे
हम भी उन्हें देख कर ,
कोई गीत गुनगुनायेंगे।
सुबह से छोड़ कर अपने नीड को,
उड़ गए थे पता नहीं किस दिशा को,
दिन भर नापते हुए आकाश,
कर गए होंगे न जाने कितने,
नदिया, समुन्दर पार,
फिर भी भूले नहीं अपना ठिकाना,
पत्तियों के झुरमुट में छिपा आशियाना,
उस आशियाने में बैठ कर जब वे
अपने थके पंख सहलायेंगे,
हम भी उन्हें देख कर, कोई गीत गुनगुनायेंगे.
पंखों से लिखे गीत उन्होंने आसमान पर,
उड़ान के शब्दों को ताना
धूप की कमान पर,
हवा की स्वर लहरियों पर सजाया
जीवन के राग को, अर्थों के दानों को तलाशते,
नाप रहे धरती आकाश को,
जीवन से जुड़े उन्ही मनभावन रागों को ,
जब बैठ अकेले वो, दिन ढले दोहराएंगे,
हम भी उन्हें देख कर, कोई गीत गुनगुनायेंगे।

आत्मनिर्भर बनें

मंजू उपाध्याय
शोधार्थी, हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

आओ सखी आत्मनिर्भर बनें,
अपने दम पर दुनिया देखें।
जब भी हम कदम बढाएं आगे,
पीछे मुड़कर कभी न देखें।
हम अपने इन्हीं हाथों से,
लिख डाले तकदीर हमारी।
बने स्वयं ही भाग्य विधाता ,
चलते रहें कर्तव्य मार्ग पर ,,
और करें अपना सम्मान।
जीवन की यह गति निराली,
जिसमें कभी आंधी और पानी।
चलो इसे हम स्वर्ग बनाएं
दुनिया वालों को दिखलाएं।
नही डरेंगे,नही झुकेंगे,
नहीं सहेंगे अत्याचार।
आत्मनिर्भर बनकर ही,बना सकेंगे बिगड़े काम।
जहाँ अंधेरे वहीं उजाले,बस हम बने अपने रखवाले ।

स्त्री की चाहत

अच्छा सुनो,
कभी सोचा है
क्या चाहती है एक स्त्री ?
लगता होगा कभी तुम्हे कि
चाहिए उसे तुम्हारा धन
तो लगता होगा कभी कि
चाहिए उसे तुम्हारा ऐश्वर्य
नही ..
अगर ऐसा सोचते हो
तो गलत हो तुम
बिल्कुल गलत
क्योंकि नही चाहिए उसे
कोई शान ओ शौक़त
नही चाहिए उसे
इस जहां की आकूत संपत्ति
उसे तो चाहिए बस
तुम्हारा स्नेह अपनापन और
तुम्हारा थोड़ा वक़्त
जहां कुछ फ़ुरसत के पलों में
संग तुम्हारे कुछ बातें कर सके
तुम्हारे कंधे पर सर रख कर
खुद को थोड़ा दुलाड़ सके
उसे चाहिए तुम्हारी गोद
जिसमे सर रखकर
खुद को समझ सके
स्वप्नलोक की राजकुमारी
उसे चाहिए वह सीना
जिससे लगकर खुद को
महसूस कर सके महफूज़
वह है सिर्फ तुम्हारे
अपनत्व को लालायित
वो चाहती है बस
तुम्हारे अगाध प्रेम की छांव
सच बताओ ,
क्या कभी जान पाए हो
क्या चाहती है एक स्त्री।

मोनिका राज
मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार

कहाँ अब दिन सुहाने हैं

नही है फ़िक्र अब वैसी
नहीं वादे पुराने हैं
निभाते थे जिसे पहले
कहाँ रिश्ते पुराने हैं..।।
लुभाते थे कभी जो गीत
हम भी गुनगुनाते थे
नहीं भाते हैं अब मन को
कहाँ ऐसे तराने हैं..।।
झलक धूमिल सी लगती है
झुकी नज़रों में अक्सर अब
है बदला प्रेम का मौसम
कहाँ अब दिन सुहाने हैं..।।
चुराते थे कभी जो दिल
चुराते हैं नज़र अब वे
जो मरते थे कभी हम पर
कहाँ ऐसे दीवाने हैं..।।
जुगत मिलने की करते थे
कोशिशें रंग लाती थीं
नहीं होता है मिलना अब
कहाँ ऐसे बहाने हैं..।।
कहाँ ऐसे बहाने हैं..।।

विजय कनौजिया
अम्बेडकर नगर
(उ० प्र०)

पुराना है तंत्र शासन का

पुराना है तंत्र शासन का
क्या करे इस आसन का
भूख नाचती सड़को पर
होठों पड़ी पपड़ी की गाथा
कब सुनती हैं सरकारें...!
दरकार भाषणों की थी कब ?
लूट रहे जीवन को सब
नग्न नाच प्रत्यक्ष सम्मुख
अहो! अभी है सब विमुख
चित्कार उठी सूनें तम में
चीर घने भ्रष्ट तंत्र को...!
फहरा तिरंगा लाल किले!
संसद से उठ खड़े होकर
हर बार बार-बार कहेंगे
सबसे बड़ा प्रजातंत्र हमारा!
पर! क्या कहेंगे मंत्री-संतरी
सबसे भ्रष्ट तंत्र हमारा...!
चुसेंगे रक्त गरीबों का
पालने खुद के पेट को...!
भूखे मरती आँतों को लूटे
हर सिन्दूर की मांग लूटते
उठती,बिलबिलाती भूख सहारे
करेंगे हम तो शासन तंत्र में...!

ज्ञानीचोर
मु.पो.रघुनाथगढ़,
सीकर राजस्थान

एहसास बाक़ी है

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

जानता हूँ मुझसे दूर हो गयी हो तुम
इस बात पर अब भी यकीं करना बाक़ी है.
अपने दर्द को ही दवा बना लिया है मैंने
बस अब ग़मी में भी खुश रहना बाक़ी है.
खुल कर हंसे हुए हो गए हैं एक अरसे
अब तो लब पर बस फ़ीकी मुस्कान बाक़ी है.
यूँ तो जीना कब का छोड़ दिया है मैंने
अब तो बस जिम्मेदारियां निभाना बाक़ी है.
हर ज़र्रे-ज़र्रे से अब भी पूछता हूं मैं तेरा पता
कभी तो लौट आओगी यह आस अब भी बाक़ी है.
तुम्हारे जाने से एक खालीपन-सा है जीवन में
तुम्हारे ख़्वाब संग जीवन को साकार करना बाक़ी है.
भीड़ में भी हरपल पाता हूँ तन्हा मैं खुद को
संग बिताए लम्हों के ही अब तो जीना बाक़ी है.
नही ले सकता कोई तुम्हारी जगह मेरी ज़िंदगी में
तुम जान हो मेरी यह एहसास अब भी बाक़ी है.

विद्यार्थी की व्यथा

सूनी है गलियाँ।
सूनी नजरियाँ।
किसके संग खेलूँ मैं आँखमिचौलियाँ।
न दिखे कोई सखा न सहेलियाँ ,
शाला में भी लग गयी कुन्डियाँ,
कहाँ गई शाबाशी की थपकियाँ,
अब न बताते कोई मेरी गलतियाँ,
तरस रही है मेरी अखियाँ,
कब खुलेंगी मेरी शाला की कुन्डियाँ।
प्रात: माँ की उलाहना और प्यारी बलैयाँ ,
दोस्तों के संग ली गई चुटकियाँ,
टिफ़िन में से चुराती इडलियाँ
शाला से घर आते बाँट जोहती पगडंडियाँ,
अब न बीते दिन और रतियाँ,
शाला जल्दी खुले बस यही है विनंतियाँ।
यही है विनंतियाँ यही है विनंतियाँ।।

माला पहल, मुंबई

औरत की मर्यादा

औरत तेरी यही है मर्यादा
हर पल बटी तू आधा- आधा ।
कभी अपनो के लिए,कभी औरों के लिए ,
नही बटी कभी तू अपने सपनों के लिए ।
तूने सोचा नही की तूने क्या है खोया,
तूने टूटे रिश्ते मे भी खुद को संजोया।
तू टूटी हर पल पर किसी को न तोड़ा,
जैसे भी बन पड़ा तूने सबको है जोड़ा।
फिर क्यों सबने तुझको समझा है माया,
क्या यही है एक औरत की तडपती काया।
जब भी उसने आगे बढ़ना चाहा,
खुद को क्यों अकेला ही पाया ?
क्यो औरत के किस्मत मे ही दर्द आया
उसने पाया तो बहुत कुछ,
पर पाकर भी न पाया
न जाने कैसी और किसकी है छाया ?
औरत तेरी यही है मर्यादा
हर पल बटी तू आधा - आधा ।

भारती सिंह
घनसोली नवी मुंबई

गीत

तेरे प्यार का करके इंतजार
चेहरे पे उग आई झुर्रियां
काश !कुछ दिन सब्र की होती
तो नहीं होती हाथों में तेरे
किसी गैर की चूड़ियां
समझ न पाई तू,मेरी मजबूरियां-- २
हुआ तेरे लिए परदेशी
गया आश लगाकर
लौटूंगा तो होगी ढेरों खुशियां
तय करूंगा सफर, तुझे अपना बनाकर
लेकिन तुम और की होकर,
बढ़ागई दूरियां
काश !कुछ दिन सब्र की होती
तो नहीं होती हाथों में तेरे
किसी गैर की चूड़ियां
समझ न पाई तू,मेरी मजबूरियां-- २
पांव रखा जब गांव में
थी सुबह की बेला,
उठ रही थी तेरी डोली
ख्वाब हो गए मेरे धाराशायी
हुआआहत,सुन लोगों की बोली
वफा तो निभाया था बखूबी
दाग लगा गई वेवफाई का
जहां भी रहो,खुश रहो दुआ है मेरी
वक्त के रथ पे सवार होकर
तय करेंगे हम सफ़र
सह लेंगे दर्द जुदाई का
लाल जोड़े में कैद होकर
हो गई किसी और की बहूरिया
काश !कुछ दिन सब्र की होती
तो नहीं होती हाथों में तेरे
किसी गैर की चूड़ियां
समझ न पाई तू,मेरी मजबूरियां-- २
तेरे प्यार में करके इंतजार
चेहरे पे उग आई झुर्रियां
काश !कुछ दिन सब्र की होती
तो नहीं होती हाथों में तेरे
किसी गैर की चूड़ियां
समझ न पाई तू,मेरी मजबूरियां-- २

राजेंद्र कुमार सिंह
पाथरडीह रोड
मेट्रो जोन,नाशिक

आकांक्षा

नहीं चाहती उड़ उड़ कर नभ को छू लूं,इतराऊं मैं
नहीं कामना महादेव बन,घर घर पूजी जाऊं मैं
मुझे चाह बस,माटी हूं तो,माटी हीं रह जाऊं मैं
कभी न चाहा बनके पिंडियां,देवी मैं कहलाऊं
रोली,अक्षत फूल कभी,अपने सिर पर चढ़वाऊं
हां,जरूर चाहूं ,किसान के खेतों में मुस्काऊं मैं
मैं अपनी छाती पर हल, कुदाल को चलते देखूं
अपनी फसलों से हर भूखे, पेट को पलते देखूं
ऊसर कहे न कोई इतना,उपजाऊं हो जाऊं मैं
गर्व मुझे होता कुम्हार की चाक पे जब मैं नाचूं
दीपक बनकर नव प्रकाश के दोहे, कविता बांचूं
हाथ लात से गूंथे वो,फिर भी पुलकित हो जाऊं मैं
मेरी गोद में हर महान का होता आया,पालन
सबके हित,होता समान मेरी लोरी का गायन
पंचतत्व में से हूं एक,सुनकर अतिशय सुख पाऊं मैं
नहीं चाह चंदन बनके,उन्नत ललाट पर सोहूं
बनूं सजावट का सामान,सजूं सबका मन मोहूं
एक मात्र आकांक्षा,सबसे, माटी मां कहलाऊं मैं।

डॉ गोरख प्रसाद मस्ताना

कालनेमि से रिस्ते जग में

व्याकुल हुई हृदय की पीड़ा, घायल हुये अधूरे सपने।
बिना कहे जो समझ सके ना, कैसे उनको कह दें अपने।
बहती रही समय की धारा, बढ़ते घटते रहे किनारे।
परिवर्तन की बिकट बाढ़ ने, अपने लम्बे पैर पसारे।
बदल गई अब सोच लगे हैं, अपने ही अपनों को ठगने।
बिना कहे जो समझ सके ना, ऐसे जन काहे को अपने।।
कौन काम का कितना अपना, रिस्तों का अब ऐसा मानक।
स्वार्थ सिद्धि से रिस्ते निभते, अपनेपन की बातें भ्रामक।
अब तो लोग लगे हैं प्राय:, सही बात कहने से बचने।
गलत बात को गलत कहे ना, कैसे उनको कह दें अपने ।।
जिनको अपना मान हृदय के, आसन पर हरदम बैठाया।
लेकिन यह थी भूल हमारी, आज समय ने है समझाया।
कोई नहीं किसी का अपना, कालनेमि से रिस्ते जग में।
बिन बोले जो पीर समझ लें, सच में वे होते हैं अपने।।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव "कोमल"
लहार, जिला-भिण्ड (म०प्र०)

आज का भारत

अब भारत है भारतीयों का, नहीं है जयचंदों का प्यारे,
कोई इधर आँख न उठाना, अब यहाँ पर चौहान हैं सारे।
और चौहान भी वो जो अपनी गलती कभी ना दुहराएंगे,
मरेंगे मारेंगे अपनी जमीं पर और यहीं पर दफनाएंगे।
सावधान ऐ दुनियां वालो, भारत अब नहीं लुटने वाला,
और न किसी भी लुटेरे को छोड़ने वाला न सहने वाला।
बहुत बाँट लिया भारत को, पर अब नहीं बँटने वाला,
धर्म पंथ क्षेत्र और भाषा किसी भी चाल न फँसने वाला।
भारत एक है एक रहेगा बन मिसाल एकता अखंडता की,
किसी की दाल न गलने पाएगी न सफलता उदंडता की।
पंथ, मार्ग, विचार अनेक पर धर्म एक ही है भारत का,
स्त्री बच्चों की सुरक्षा सम्मान अरु भाईचारा आपस का।
प्रेम भक्ति ज्ञान साधना यहां के प्रतीक आज भी हैं सारे,
मानव जीवन का चरम लक्ष्य देगा सबको भारत ही प्यारे।

सत्येंद्र सिंह,
आंबेगांव खुर्द, पुणे

हो जायेगा जीवन खुशहाल

रहा है टकराव नए और पुराने का
जोश और अनुभव का, फुर्ती और संयम का
उभरने और ढलने का, अपेक्षा और उपेक्षा का,
चढ़ान और ढलान का, कोई कहे तकाज़ा उम्र का,
है अलगाव केवल विचार का,
चलो समर्पण विचार मेरे,
तुम सही,गलत जज़्बात मेरे,
क्या पा लिया तुमने फिर,
माना तुम्ही जीते, मैं हारा, क्या खो दिया मैंने फिर,
नौजवानों दो तवज्जो ज़्यादा,
देखी दुनिया, तुमने जिनसे आधा,
अनुभव की खान, अवश्य करो उनका गुणगान,
बुजुर्गों खुल कर लुटा दो प्यार, यह पीढ़ी तो हो रही तैयार,
बिना आपके उनका नहीं किनारा,
आपसे ही सीखकर बनायेंगे,
ये संसार प्यारा , आओ मिल-जुल कर एक नया,
युग तैयार करें, जो हो गयी गलतियाँ
उससे किनारा करें, हो जायेगा जीवन खुशहाल,
आओ सबके विचारों का सम्मान करें ।

श्यामनंदन आर. यादव
(शिक्षक, कवि)
मुंबई, (महाराष्ट्र)

नारी

रहती है क्यों सिमटकर
आज उसकी सभी आशाएँ
मिलती हैं क्यों उसको
हमेशा ही निराशाएँ।
आज की नारी क्यों
स्वतंत्र होकर भी पराधीन है
क्यों आज भी वो
पुरूष के ही अधीन है।
निकले जब घर से वो
लाख बुरी निगाहें उठती हैं
उन निगाहों को देखकर
क्यों उसकी साँसें सिमटती हैं।
डरती डरती चलती है वो
साँस नहीं ले पाती है
क्यों इन बुरी निगाहों से
कंपित होती उसकी छाती है।।

नीतू कुमारी
छात्रा व लेखिका
मुकुन्दगढ झुन्झुनू राजस्थान।

एकाकीपन की पीड़ा

मिटता कहाँ वियोग-मिलन का अंतर,
शून्यता की चादर मेरे नग्न देह पर;
मेरी बूढ़ी आँखें तुम्हारी
राह-राह यूँ ही बिछ जाती है,
एकाकीपन की पीड़ा बढ़ जाती है।
दिखलाई नहीं देता कोई अपना,
आँखों से रूठा एक-एक सपना;
मीलों की खामोशी में तुम्हारी
यादें बारबार सताती है,
एकाकीपन की पीड़ा बढ़ जाती है।
सुनसान गली, सड़क और शहर,
तुम्हारे बिन अकेला होने का डर;
विलग हो तुमसे मेरी व्याकुल
कामनाएं मुरझा जाती हैं,
एकाकीपन की पीड़ा बढ़ जाती है।

सुव्रत दे
सम्बलपुर, उड़ीसा

अमर प्यार

गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम
दाऊदनगर, औरंगाबाद
बिहार

मोर मनवा भयो उदास
फिर टूटी गई मेरी आस।
आज सपने में दी दिखाई
पर वह आई न मेरे पास।
मैंने लगाई कई बार आवाज
मुंह मोड़ चली गई दगाबाज।
मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा
आखिर क्या हो गई ऐसी बात।
जब जाना ही था मेरी जिंदगी से
तो फिर क्यों उसने प्रीत लगाई।
समझने का किया अथक प्रयास
मेरा साथ क्यों न आई उसे रास।
पहली बार उसने हाथ बढ़ाई
मैं कहां समझता था प्रेम पढ़ाई।
कब वह मेरे दिल में सेंध लगा दी
मुझे भनक तनिक न लग पाई।
करते थे मीठी-मीठी बातें दिन रात
कदम कदम देती थी मेरा साथ।
ऐसे मधुर मिलन खत्म हो जाएगा
मुझे रत्ती भर भी नहीं था एहसास।
स्वप्न सुंदरी ने क्यों चुन ली जुदाई
करके भरोसा,फिर भी नहीं बताई।
एक दिन मिला वह मनहूस संदेश
दिल की मलिका की हो गई सगाई।
आज भी है मुझे बेसब्री से इंतजार
मुझे मिलेगा अपने हिस्से का प्यार।
शादी तो सिर्फ एक समाजिक बंधन
दिल से दिल का मिलन अमर प्यार।

नज़र जमीन पर होती है

रहे आसमानों में उड़ते मगर
नज़र जमीन पर होती है।
ऐसे मिजाज तो बस
अच्छे इंसान में होती है।
चाहे राजा हो या रंक
सुकून सभी अपने मकान में होती है।
रहे महलों में या झोपड़ों में
अंत तो श्मशान में होती है।
व्यर्थ इस जीवन को भटकाया
असली आनन्द तो अध्यात्म में होती है।

विभा कुमारी "नीरजा"
नोयडा, उत्तर प्रदेश

तालिबानी क्या दुनिया के लिए बनेगा खतरनाक !

तालिबान के आतंकियों के साथ क्या पाकिस्तानियों का साथ है ? तो खुल कर यह देखने को मिलता है कि पाकिस्तानी सरकार तालिबानियों के साथ खड़ी है। यहाँ के नेता तो यह भी कहते हैं कि अफगानिस्तान की तालिबानी सरकार के अधिकांश मंत्रियों की शिक्षा-दीक्षा पाकिस्तान की जमीं पर हुई है।

जिस तरह का हाल देखने को मिलता है उससे यह साबित होता है कि वहाँ की महिलाएँ पूरी तरह से असुरक्षित हैं। परंतु भारत के मुसलमान तालिबानियों का सपोर्ट करते दिखते हैं। इससे उनकी मानसिकता का भी पता चलता है। दुनिया के मुसलमान तो यहाँ तक भी कहते हैं कि भारत की जमीं ही रहने लायक है और भारत के मुस्लिम सबसे सुरक्षित हैं। जिस तरह से मुसलमान नेता यहाँ पर आग उगलते हैं यदि ऐसे किसी और देश में करते तो उन्हें गोली से उड़ा दिया जाता है।

हम यह भी जानते हैं कि भारत के मुसलमानों की एक बड़ी संख्या है जो देश भक्त हैं और देश हमेशा उनके साथ खड़ा रहता है। हर भारतीय की तरह उन्हें भी वहीं सम्मान मिलता है। उनका योगदान भी देश के विकास में बहुत मायने रखता है।

पाकिस्तान के तालिबानी के कारण ही दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की हाल में होनेवाली न्यूयॉर्क में प्रस्तावित विदेश मंत्रियों की बैठक रद्द कर दी गई है। पाकिस्तान बैठक में तालिबानी प्रतिनिधि को शामिल करने पर जोर दे रहा था। काबुल में तालिबान द्वारा बनाई गई अंतरिम सरकार को किसी भी देश द्वारा औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है और पाकिस्तान हर मुमकिन कोशिश में लगा है कि तालिबान को मान्यता मिल जाए। अगर सार्क की प्रस्तावित बैठक में तालिबान के प्रतिनिधि को शामिल कर लिया जाता, तो जाहिर है, इससे सार्क को भले ही कोई लाभ नहीं होता, लेकिन यह तालिबान और पाकिस्तान की कामयाबी में दर्ज हो जाता। पाकिस्तान को कतई इस बात की चिंता नहीं है कि सार्क देशों की किसी भी स्तर पर बैठक कितनी जरूरी है, उसे केवल अपने निहित स्वार्थ से मतलब है और तालिबान ने किसी भी तरह का लचीलापन दिखाने से इनकार कर दिया है। समावेशी सरकार बनाने की पाकिस्तानी सलाह को भी उसने एक तरह से ठुकरा दिया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में तालिबान की वैधता पर सवाल उठाए हैं, क्योंकि वह समावेशी नहीं है। इसके बाद यह साफ हो गया था कि गैर-लचीले तालिबान के लिए विश्व मंचों पर राह आसान नहीं है। जब संयुक्त राष्ट्र में ही ज्यादातर देश तालिबान को वैधता देना नहीं चाहते, तो सार्क में उसे कैसे वैधता दी जाए ? तालिबान को तो सब कुछ चालाकी और बल के जोर पर हासिल हुआ है, तो उसे कोई परवाह नहीं है, लेकिन कम से कम पाकिस्तान को अपने भले-बुरे का विचार करना चाहिए। आज अगर सार्क उपयोगी या सक्रिय रहता, तो पाकिस्तान को ही सर्वाधिक लाभ होता। खुद पाकिस्तान अलग-थलग पड़ता जा रहा है। तालिबानी सोच से अत्यधिक लगाव के चलते वह असुरक्षित होता जा रहा है। पहले न्यूजीलैंड और फिर इंग्लैंड की क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान का दौरा रद्द कर दिया है।

पाकिस्तान को स्वयं अपने यहां सुरक्षा और सद्भाव का माहौल बनाना चाहिए, वरना तालिबान के साथ खुद उसकी विश्वसनीयता भी छीनती चली जाएगी। अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका को एक साथ लाने वाला समूह अपने १९वें वार्षिक शिखर सम्मेलन के बाद से मरणासन्न ही रहा है। पाकिस्तान के व्यवहार ने सार्क को बाधित किया है। यह संगठन भारत या किसी अन्य देश के वर्चस्व या मनमानी के आधार पर नहीं, बल्कि आम सहमति के सिद्धांत पर काम करता है।

साल २०१९ में पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे में बदलाव के विरोध में दक्षेस बैठक में अपने भारतीय समकक्ष के भाषण का बहिष्कार किया था। खैर, इस बार बैठक को पहले ही रद्द करने से पाकिस्तान को झटका लगा है, लेकिन क्या वह सकारात्मक दृष्टि से विचार करेगा ?

हद तो तब हो जाती है जब यह सुनने को मिलता है कि तालीबानी महिलाओं और लड़कियों की बोली लगाते हैं। एक तरफ तो वे महिलाओं की पढ़ाई व आजादी पर रोक लगाने की बाते करते हैं। पोस्टरों पर महिलाओं की तस्वीर तक को कालिख से पोत देते हैं, लेकिन बोली लगाने में कैसे उनके सम्मान को ठेस नहीं लगती है। भारत देश में सभी को अपनत्व की भावना से देखता है। चाहे महिला किसी भी धर्म की हो सम्मान एक जैसा होता है। सब के लिए भारत देश का कानून बराबर है।

पाकिस्तान और तालिबान मुस्लिम देश हैं फिर भी वहाँ का मुसलमान सुरक्षित नहीं है क्योंकि आतंकवादी किसे के सगे नहीं होते हैं और न ही उनकी कोई जाति होती है। मौका मिलते ही वे किसी को भी नहीं छोड़ते।

भारत के प्रधानमंत्री अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो विदेश के हर मंच पर आतंकवाद का मुद्दा उठाते हैं और सभी देशों से इस पर विचार और एक साथ आने की बात करते हैं। हाल ही में अमेरिका में भी उन्होंने आतंकवाद का मुद्दा उठाया और यह भी कहा कि जो आतंकवादियों का साथ देगा उसे समयानुसार नुकसान उठाना पड़ सकता है।

हमें देश के अंदर पनप रही ताकतों के खिलाब आवाज उठानी चाहिए।

...के. एस. फाउन्डेशन
द्वारा जन विचारार्थ जारी...

के. एस. फाउंडेशन एक सामाजिक व शैक्षणिक ट्रस्ट है जो मानव की सेवा में तत्पर है।

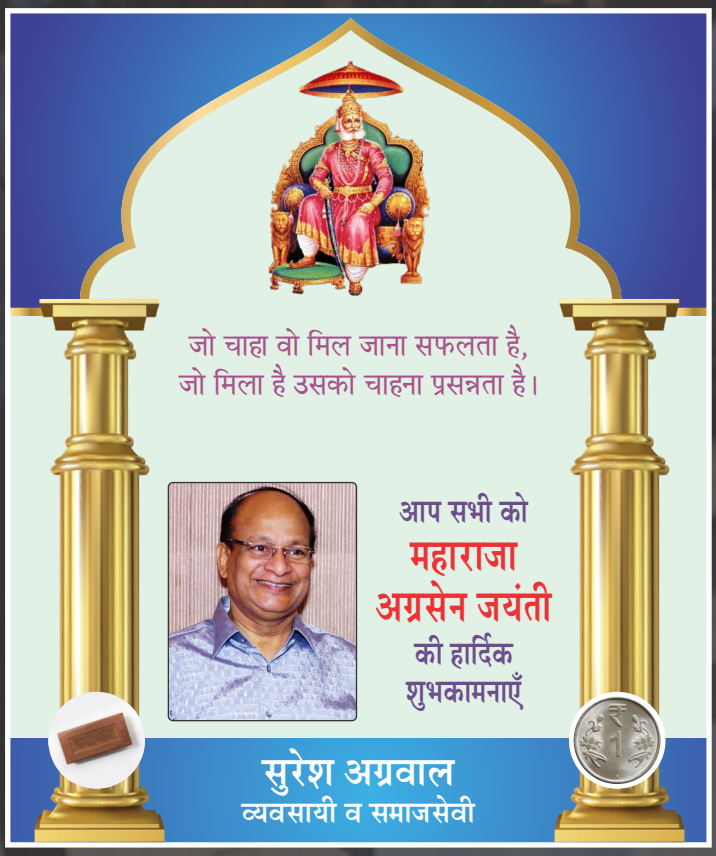

महाराजा अग्रसेन जयंती

की हार्दिक बधाइयाँ

हर्षवर्धन अग्रवाल

वर्धन इंडस्ट्रीज़

महाराजा अग्रसेन पैलेस

अग्रवाल ग्लोबल फाउंडेशन

श्री कालीप्रसाद बद्रीप्रसाद अग्रवाल चेरिटेबल ट्रस्ट

जीवन के है ये आधार, भक्ति, प्रेम, संयम, सदाचार

सनातन काल से भारतभूमि देव भूमि कहलाती है। वेद शास्त्र उपनिषद का ज्ञान हमारे ऋषि मुनियो ने अध्यात्म के माध्यम से धर्म का महत्व समझाया है। धर्म वही है जो धारण किया जाय, माना जाय। हमारे हिन्दु धर्म में त्योहारों की प्रबलता है। पूर्ण पुरुषोत्तम परमात्मा की आराधना, मनसा वाचा कर्मणा से करना हम जीवात्माओं का परम कर्तव्य है। हिन्दू कैलेंडरों के अनुसार भाद्रमास में आने वाले त्योहारों को हम बड़े उत्साह से मनाते है। इनमे प्रमुख कृष्णजन्मोत्सव, राधाजन्मोत्सव, गणपति महोत्सव जैन धर्म का महा पर्व पर्यूसन आदि आदि। यह तो हम सब को विदित है कि भगवान कृष्ण, विष्णु भगवान के अवतारी हैं। भादो मास में कृष्णपक्ष की अष्टमी को कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता है। श्री कृष्ण इसी संसार में मानव जन्म लेकर क्यों आये, इस विषय पर कई कथाएं प्रचलित हे। पुराणों की कथानुसार, सुर और असुर हमेशा विपरीत्त मनोवृति के होते है। हमेशा ही से एक दूसरे से शत्रुता रखते है।

कंस जो राक्षस कुल में जन्मा था, पिछले जन्म में कालनेमि नामक राक्षस था। उसके अत्याचारों से आहत प्रजाजनो की रक्षा हेतु भगवान विष्णु ने उसका वध किया था। शुक्राचार्यजी ने अपनी संजीवनी विद्या द्वारा उसे जीवित कर दिया था। कठोर तपस्या से ब्रह्माजी को प्रसन्न करके उसने देवताओं के हाथ से नहीं मरने का वरदान प्राप्त कर लिया। निडर होकर उसने अत्यधिक अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिये। गौ, ब्राम्हण और मनुष्यों की रक्षा हेतु विष्णु भगवान ने मानव रूप में पृथ्वी पर पदार्पण किया। इसके अतिरिक्त देवकी, वासुदेव और नन्दरायजी एवं यशोदा मैया ने भी पिछले जन्म में तपस्या करके विष्णुजी से पुत्र सुख का वरदान प्राप्त किया था।

भगवान श्री कृष्ण ने बाल काल से ही असुरोंका, दुष्टोंका संहार करके देवताओं और मनुष्यो की रक्षा की थी। श्री कृष्णजी ने अनेक प्रकार की अद्भत लीलाओ जैसे, बाललीला,रासलीला,प्रेमलीला, कुरुक्षैत्र के महायुद्ध में अधर्म पर धर्म की विजय आदि के द्वारा संसार के प्राणियों का मन मुग्ध किया। द्वारकापुरी में द्वारकाधीश बनकर शासन किया। वे कुशल राजनीतिज्ञ थे। सोलह कलाओं से पूर्ण भगवान श्री कृष्ण ने संसार के हित के लिए अभूत पूर्व कार्य किये। प्रेम स्वरूपा देवी राधा के साथ "भक्ति प्रेम" का पाठ पढ़ाया। समस्त जगत में "प्रेम ही सार हे" का महत्त्व समझाया।

आज भी उनके कृत्य, सभी भगवत प्रेमी जनो के हृदय में, आनंद का संचार कर देते है। प्रत्येक वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी का महोत्सव खूब उल्हास पूर्वक मनाया जाता है। पांच हजार साल पहले रचाई हुई लीलाओं का, अवलोकन, नृत्य और नाट्य कलाओं का प्रसारण आज भी किया जाता है। और भक्त जन देखने, सुनने और करने में नित्य, नवीन अनुभूति को प्राप्त करते है। श्री कृष्ण की आराधना से हमें, अटल भक्ति की प्राप्ति होती है, हमारा मानव जन्म सफल होता है ।

राधा जन्मोत्सव

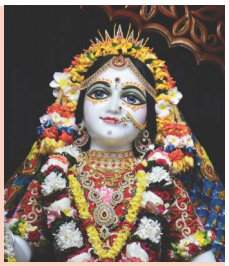

देवी श्री राधाजी का जन्मोत्सव हर वर्ष भाद्र मास की शुक्ल पक्ष अष्टमी को मनाया जाता है। श्री राधाजी भगवान कृष्ण की आल्हादिनी, शक्ति, परम प्रेयसी, पवित्र प्रेम की शाक्षात मूर्ति कही जाती है। सारे जगत में राधा - कृष्ण के पवित्र, पावन रिश्ते के बारे में सभी जानते है। परन्तु राधा जन्म में गूढ़ रहस्य के बारे में हम अपरिचित है। बरसानेकी श्री राधाजी स्वयंभू है। उनका जन्म माँ के गर्भ से नहीं हुआ था। गोलोक में अपने भाई श्रीदामा के द्वारा शापित किये जाने पर पृथ्वी लोक पर अवतरित हुई। भगवान कृष्ण ने भी पृथ्वी लोक पर जन्म लेकर राधाजी को सदैव अपने पास रहने का आश्वासन दिया।

ब्रह्मवैवर्त पुराण की कथानुसार श्री राधाजी का जन्म बरसाने के निकट रावल गांव में हुआ था। उस समय वृषभान जी ब्रज के बड़े गोप थे और निसंतान थे। उनकी पत्नी श्री कीर्तिजी संतान सुख के लिये लालायित थी। वे नित्य प्रति यमुना स्नान, पूजन एवं आराधना किया करती थी। पूजा करते हुए एक दिन यमुनाजी से एक कमल प्रकट हुआ। उस कमल के फूल से सोने के चमक सी रोशनी निकल रही थी। कीर्तिजी ने उसमे एक कन्या को नेत्र बंद किये पाया। कीर्तिजी के मन में अत्यंत वात्सल्य प्रेम उमड़ आया और उस अलौकिक सौंदर्य व लावण्य युक्त कन्या को संतान रूप में अपनाया।

ग्यारह मास उपरांत ब्रज क्षेत्र के गोकुल गांव में भगवान श्री कृष्ण ने नन्द गोप और यशोदा जी के घर पुत्र रूप में अवतार लिया। नन्द बाबाजी ने कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष में सभी स्थानों पर सन्देश भेजा। तब श्री वृषभानजी अपनी गोद में राधा रानी को लेकर नन्द भवन में पहुंचे। वहाँ श्री बाल स्वरूपा राधाजी ने प्रथम वार नेत्र खोले और बालकृष्ण के दर्शन किये। इस प्रकार गोलोक धाम से पृथ्वी लोक पर मानव अवतार में प्रिया और प्रियतम का मिलन संभव हुआ।

प्राचीन कथानुसार वृषभानजी पिछले जन्म में सुकंद नाम के धर्मात्मा राजा थे। उन्होंने पत्नी सहित तप करके ब्रह्माजी से वरदान माँगा। राजा ने मुक्ति का वरदान माँगा और उनकी भार्या ने पृथ्वी पर जन्म लेकर दिव्य कन्या की प्राप्ति का वर माँगा। फल स्वरुप द्वापर युग में यादव कुल में जन्म लेकर संतान रूप में दिव्यशक्ति, श्री देवी राधाजी प्रकट हुयी।

राधा और कृष्ण दोनों ही पूर्ण है। कृष्ण, राधा की रसधारा है व राधा, कृष्ण की अंतर्धारा है। ये दोनों एक ही है। ये अद्भत दैवीय संयोग है, कि श्री कृष्ण को स्मरण करने से राधा स्वयं आजाएगी और राधा को स्मरण करने पर कृष्ण स्वत: ही प्रगट हो जाते है। राधाजी का "प्रेम" विशद और निष्काम प्रेम है, जिसमे प्रेमास्पद को अधिक से अधिक सुख पहुँचाने की प्रबल कामना होती है।।

श्रीमती सरोज जे. अग्रवाल, गोरेगांव, मुंबई

महाराजा अग्रसेन महादानी थे

दुनिया में आज जिस समाजवाद की बात की जाती है उसको ५००० वर्ष पूर्व ही महाराजा अग्रसेन ने सार्थक कर दिखाया था। महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का सच्चा प्रणेता कहा जाता है। महाराजा अग्रसेन ने तंत्रीय शासन प्रणाली के प्रतिकार में एक नयी व्यवस्था को जन्म दिया। अपने क्षेत्र में सच्चे समाजवाद की स्थापना हेतु महाराजा अग्रसेन ने नियम बनाया था कि उनके नगर में बाहर से आकर बसने वाले हर व्यक्ति की सहायता के लिए नगर का प्रत्येक निवासी उसे एक रुपया नगद व एक ईंट देगा, जिससे आसानी से उसके लिए निवास स्थान व व्यापार करने के लिये धन का प्रबन्ध हो जाए। उन्होंने पुन: वैदिक सनातन आर्य सस्कृंति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य के पुनर्गठन में कृषि-व्यापार, उद्योग, गौपालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुन: प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाया। महाराजा अग्रसेन समाजवाद के प्रर्वतक, युग पुरुष, राम राज्य के समर्थक एवं महादानी थे। महाराजा अग्रसेन उन महान विभूतियों में से थे जो सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय: कृत्यों द्वारा युगों-युगों तक अमर रहेंगे।

धार्मिक मान्यतानुसार मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम की चौंतीसवीं पीढ़ी में सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल के महाराजा वल्लभ सेन के घर में द्वापर के अन्तिमकाल और कलियुग के प्रारम्भ में अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ, जिसे दुनिया भर में अग्रसेन जयंती के रूप में मनाया जाता है। राजा वल्लभ के अग्रसेन और शूरसेन नामक दो पुत्र हुये थे। अग्रसेन महाराज वल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र थे। महाराजा अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराज वल्लभ से कहा था कि यह बालक बहुत बड़ा राजा बनेगा। इस के राज्य में एक नई शासन व्यवस्था उदय होगी और हजारों वर्ष बाद भी इनका नाम अमर होगा। उनके राज में कोई दुखी या लाचार नहीं था। बचपन से ही वे अपनी प्रजा में बहुत लोकप्रिय थे। वे एक धार्मिक, शांति दूत, प्रजा वत्सल, हिंसा विरोधी, बली प्रथा को बंद करवाने वाले, करुणानिधि, सब जीवों से प्रेम, स्नेह रखने वाले दयालू राजा थे।

महाराजा अग्रसेन एक सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा थे। जिन्होंने प्रजा की भलाई के लिए वणिक धर्म अपना लिया था। महाराज अग्रसेन ने नाग लोक के राजा कुमद के यहां आयोजित स्वयंवर में राजकुमारी माधवी का वरण किया। इस विवाह से नाग एवं आर्य कुल का नया गठबंधन हुआ।

महाराजा वल्लभ के निधन के बाद अपने नये राज्य की स्थापना के लिए महाराज अग्रसेन ने अपनी रानी माधवी के साथ सारे भारतवर्ष का भ्रमण किया। इसी दौरान उन्हें एक जगह शेर तथा भेड़िये के बच्चे एक साथ खेलते मिले। उन्हें लगा कि यह दैवीय संदेश है जो इस वीरभूमि पर उन्हें राज्य स्थापित करने का संकेत दे रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया जिसे अग्रोहा नाम से जाना जाता है। वह जगह आज के हरियाणा के हिसार के पास है। आज भी यह स्थान अग्रहरि और अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ के समान है। यहां महाराज अग्रसेन और मां लक्ष्मी देवी का भव्य मंदिर है। अग्रसेन ने अपने छोटे भाई शूरसेन को प्रतापनगर का राजपाट सौंप दिया। ऐसी मान्यता है कि महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के पितामह थे। उन्होंने परिश्रम और उद्योग से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर वैश्य जाति को व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर आत्म-रक्षा के लिए शस्त्रों के उपयोग की शिक्षा पर भी बल दिया। उस समय यज्ञ करना समृद्धि, वैभव और खुशहाली की निशानी माना जाता था।

माता लक्ष्मी की कृपा से श्री अग्रसेन के १८ पुत्र हुये। राजकुमार विभु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को १८ पुत्र के साथ १८ यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि यज्ञों में बैठे १८ गुरुओं के नाम पर ही अग्रवंश (अग्रवाल समाज) की स्थापना हुई। ऋषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को महाराजा अग्रसेन के १८ पुत्रों के साथ महाराजा द्वारा बसायी १८ बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया। एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी अग्रवाल समाज में प्रचलित है। महाराज अग्रसेन ने १०८ वर्षों तक राज किया। महाराज अग्रसेन ने एक ओर हिन्दू धर्म ग्रंथों में वैश्य वर्ण के लिए निर्देशित कर्म क्षेत्र को स्वीकार किया और दूसरी ओर देशकाल के परिप्रेक्ष्य में नए आदर्श स्थापित किए। उनके जीवन के मूल रूप से तीन आदर्श हैं- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, आर्थिक समरूपता एवं सामाजिक समानता। एक निश्चित आयु प्राप्त करने के बाद कुलदेवी महालक्ष्मी से परामर्श कर वे आग्रेय गणराज्य का शासन अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु के हाथों में सौंपकर तपस्या करने चले गए। कहते हैं कि एक बार अग्रोहा में बड़ी भीषण आग लगी। उस पर किसी भी तरह काबू ना पाया जा सका। उस अग्निकांड से हजारों लोग बेघरबार हो गये और जीविका की तलाश में भारत के विभिन्न प्रदेशों में जा बसे। पर उन्होंने अपनी पहचान नहीं छोड़ी। वे सब आज भी अग्रवाल ही कहलवाना पसंद करते हैं और उसी १८ गोत्रों से अपनी पहचान बनाए हुए हैं। आज भी वे सब महाराज अग्रसेन द्वारा निर्देशित मार्ग का अनुसरण कर समाज की सेवा में लगे हुए हैं।

आलोककुमार अग्रवाल
मुंबई

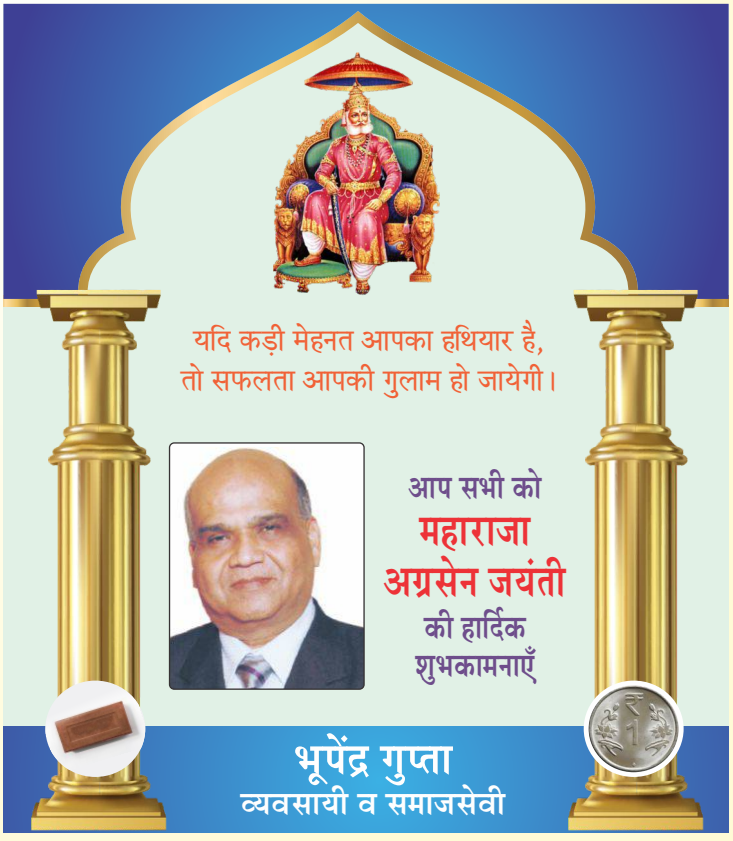

नई माँ

"मैं इनके पैर नहीं छूउँगा पापा" एक वयस्क पुरुष स्वर नीलिमा के कानों में पडा। उसके मन को थोडी ठेस सी लगी परन्तु अगले ही पल एक स्निग्ध मुस्कान उसके ओठों पर तैर गई। वो दरवाजे के इस ओर ही ठिठक गई, पिता पुत्र के बीच अभी उपस्थित होकर वो वातावरण को असहज नहीं बनाना चाहती थी क्योंकि उसको इस बात का आभाष अब तक में हो चुका था कि आलोक के मन मे उसके प्रति सद्भावना नहीं है परन्तु वह काया की तरह आलोक के प्रति भी बहुत ममताभाव रखती थी। शादी करके अपने पति नवीन के घर आए उसको पूरे ग्यारह महीने हो गये थे। अपने पति की बेटी काया और नवीन (पति) के साथ इस घर में रह रही थी। आलोक दूसरे शहर में अपनी मेडिकल की तैयारी कर रहा था परीक्षाएं खत्म होने पर हॉस्टल से आज ही घर आया है। नवीन आयकर विभाग में अधिकारी हैं दो साल पहले एक कार दुर्घटना में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी और बेटी काया अपने दोनों पैर गवाँ कर व्हील चेयर पर आ गई थी। नवीन के लिये बेटी, घर और नौकरी एक साथ सब सँभालना बहुत कठिन हो रहा था फलत: नीलिमा इस घर मे व्याह कर आ गई। अपने मृदु स्वभाव और अथक सेवाभाव से कुछ ही दिनों में ही किशोरी पुत्री काया का मनमोह लिया।अपनी अथाह ममता उडेल दी उसने काया पर।

नवीन खुश और चिन्तामुक्त हो गये। आज बेटे आलोक की आने की खुशी में नीलिमा ने काया से पूछकर उसकी पसंद की सारे व्यञजन बहुत प्यार से बनाए।

काया की व्हील चेयर को सहारा देती हुई वो बैठक की ओर ले ही जा रही थी तभी उसके कदम आलोक के उस वक्तव्य से ठिठक गए और वह काया को दरवाजे के पास तक छोड़ कर रसोई में लौट आई थी। नवीन बच्चों को कमरे में अकेला छोड़ नीलिमा के पास आये तो देखा कि वह बडी तन्मयता से प्लेटें लगाने में लगी है। नवीन ने धीमे से नीलिमा का कँधा थपथपाया तो वह मुड़कर मुस्कुरा दी और बोली हमारा बेटा आज घर आया है आप डाइनिंग टेबल पर बैठिये मैं बच्चों को बुलाकर लाती हूँ। कमरे में आते हुए निलिमा ने काया को भाई से कहते सुना भइया नीलिमा मासी बहुत प्यारी हैं, उन्होने मेरा ऐसे ख़याल रखा है जैसे बस एक माँ ही रख सकती है।उन्होने मेरे पैर ठीक करने के लिये अपनी जान लडा दी है। अब डाक्टर का कहना है कि यदि मेरे पैरों की इसी तरह से एक्सरसाइज और मालिश होती रही तो मैं एक साल के भीतर अपने पैरों पर फिर से खडी हो सकती हूँ, ये सब मासी माँ की अथक मेहनत का ही फल है भइया! आप उनके प्रति अपने मन में कोई कड़वाहट मत रखिए प्लीज! कुछ दिन में ही आपको अहसास हो जायेगा कि मैंने आपसे मासी माँ के बारे में सत्य ही कहा है।

दो महीने बाद फिर आज आलोक को कॉलेज के लिये हॉस्टल में रहने जाना है। घर से विदा होते वक्त आलोक ने आज फिर झुककर नीलिमा के पैर छुए उसकी आँखों में आँसू भर आए, इन दो महीनों में वो अपनी नई माँ से पाया हुआ ढेर सारा प्यार अपने साथ लेकर जा रहा था।काया नीलिमा का हाथ थामे मुस्कुरा रही थी। नवीन के चेहरे पर संतोष का भाव था उनको महसूस हो रहा था कि उनका बेटा उनके पास लौट आया है। नीलिमा ममत्व से आलोक को जाते हुए देखती रही थी।

डॉ. सुमन सुरभि
शारदा नगर, लखनऊ

नेता जी कहां हैं ?

शमीम साहब हैरान-परेशान है,सप्ताह दिन से नेता जी को खोजते फिर रहे है,पर नेता जी है कि अपना टेबल कुर्सी छोड़ न जाने कहां गायब हो गए हैं। नेता जी से शमीम साहब का भेंट हो भी तो कैसे हो! किसी से पुछे तब न कोई कुछ बताये उन्हें। वो तो मन ही मन राधा रानी बन कृष्ण को खोजते फिर रहे थे जैसे! ओभरसियर से नये नये सिविल इंजीनियर बने थे सो सुबह-शाम ठेकेदारों से मेल जोल बढ़ाना भी जरूरी था लेकिन जिनकी कृपा से तारापुर कोलियरी में उनकी एज ए इंजीनियर पोस्टीन्ग हुई थी उनसे अभी तक मुलाकात न होना अब उसे अखरने लगा था।

और फिर नेता जी तो कोई खधरधारी नेता थे नहीं,जो दूर से ही खदबदाते हुए नजर आ जाते,उनकी साफ छवि और सादगी भरा जीवन किसी भी छुट भैये नेताओं पर भारी ही पड़ता रहा है और ऐसे लोग भीड़ में नहीं -एकला चलो की राही होते है। अच्छे काम और अच्छे परिणाम पसंद लोगों के बीच ही ऐसों का बसेरा होता है।

नेता जी भी एकदम से किसी कोने से नेता नहीं लगते! साधारण कपड़े, पेंट-शर्ट, साधारण पहनावे में वह बिल्कुल अलग ही लगते थे-फिल्मों के आलोक नाथ जैसे। देह-दशा में भी नेता नहीं लगते ।बारह साल आफिस में काम करके भी पसली में पाव भर मांस नहीं चढ़ा तो और क्या ढुंढिएगाश, नेता का एक भी लक्षण ढुंढने से नजर नहीं आता। पूरा वेष भूषा एक दम गंवई! एक दम मजदूर से भी गए गुजरे हैं हमारे नेता बाटुल दा। अरे नेता माने नेता-देह से, कपड़े से, चलने-फिरने, उठने-बैठने, में झलक आनी चाहिए जिनमें ये सारी खुबियां हो वो आज का नेता!

जिनमें अक्कड न हो वो किसी एंगल से नेता नहीं माना जा सकता है। उसकी हर बात में नेता गिरी की झलक आनी चाहिए। पर हमारे बाटुल दा ने ई सब सीखा ही नहीं! सुना है आज तक कंपनी क्वाटर भी नहीं लिया है। दूसरा होता तो दो चार क्वाटरों में अलग से कब्जा कर दबंग नेता का खिताब पा चुका होता। लेकिन यह तो अपना एंटीना सीधे गांव से जोड़ रखा है। आज भी अपनी फटफटी से घर से आना जाना करते हैं। इसका वो दो फायदे कायदे से बताते हैं- 'गांव के लोगों से जुड़ाव बना रहता है और दूसरा परिवार के साथ जीवन गुजारना परम सुख की प्राप्ति होती है जो शहर या क्वाटर में रहकर आप कभी नहीं पा सकते हैं।"

लो कर लो बात,आज भला परम सुख के पीछे कोई भागता है भला, सभी को बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपैया पसंद है और हमारे बाटुल दा परम सुख के पीछे पड़े थे। लगता है न अद्भुत विचार का धनी! किसान परिवार से मर खपकर कोलियरी तक पहुंचे हैं! नेता गिरी कहां से सीखते बाटुल दा! वरना इतना अच्छा काम करते हैं मजदूरों का-इनको तो अभी तक मजदूरों का बड़ा नेता हो जाना चाहिए था । खादी -वादी पहन कर रहना चाहिए, पर ये तो मजदूरों को सुधारने की बात करते चलते हैं "शराब मत पियो,जुआ मत खेलो, इससे कई पीढ़ियां अपंग हो जाती है...।"

अरे नेता माने नेता होता है, खादी-वादी पहनो, मजदूरों के बीच दस में नौ झूठ बोलो। लोगों के बीच बड़ी बड़ी डीन्गे हांको, फलना-ढकना को ढंक कर रखो और चिलना को चलान करवा दो और ऊपर से एक आध बात फोड़ दो-कौन अफसर मेरा कहा नहीं मानेगा,ऐसी जगह ले जाकर पटकुंगा कि जहां दारू भी नहीं मिलेगा आदि आदि....!

तो बाटुल दा ने बड़ा निराश किया शमीम साहब को, वो खधडधारी नेता जी को खोजते फिर रहे थे और मिला बाटुल दा के रूप में मामूली किरानी! गजब का चकमा दिये आपने बाटुल दा, हम तो समझे थे, नेता जी मतलब कोई बड़ा नेता होगें।

"चौथी बार हम मिल रहे हैं ....!" बाटुल दा ने जवाब में कहा था !!

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

व्रत का त्याग

किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि इतना बुरा समय भी आ सकता है। कोरोना संक्रमण ने लोगों को हर तरह से तबाह कर डाला। वे लोग ख़ुशक़िस्मत हैं जो इसकी चपेट में आकर भी ज़िंदा बच गए। लोग बच भी गए तो सड़क पर आ गए। लगातार एक साल तक कोविड के रोगियों का उपचार करते-करते एक दिन मेरा भाई भी इस भयानक संक्रमण की चपेट में आ गया। पहले दिल्ली के दो हस्पतालों में और बाद में गुरुग्राम के एक नामी हस्पताल में कई हफ़्तों तक रहने के बावजूद भाई की हालत में सुधार होने के बजाय उसकी हालत बिगड़ती चली गई तो उसे एक्मो सपोर्ट के लिए एयर एंबुलेंस के ज़रिए तेलंगाना के एक नामी हस्पताल में शिफ़्ट किया गया। देश के अधिकांश भागों में लॉकडाउन अथवा कर्फ़्यू लगा हुआ था लेकिन गनीमत थी कि हवाई सेवा उपलब्ध थी। जगह भी मिल गई। भाई को एयरलिफ़्ट करवाने के बाद मैं अपनी भाभी के साथ एयर एंबुलेंस के पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थी।

भाई को एडमिट करवाने के बाद मुझे घर की चिंता भी सताने लगी। घर पर मेरा भतीजा, मम्मी-पापा और दादी ही रह गए थे। सभी का बुरा हाल था। एक हफ़्ते के बाद मैं वापस दिल्ली आई और मम्मी व अपने एक कजिन को तेलंगाना के लिए रवाना कर दिया। कुछ दिनों के बाद वहाँ से फोन आया कि पापा और बच्चे को भी भेज दो क्योंकि भाभी को अपने बेटे और पापा को देखे हुए काफी समय हो गया था। मेरा भी भाई के पास पहुँचना ज़रूरी था लेकिन दादी ? दादी तो किसी भी सूरत में हमारे साथ नहीं जा सकती थीं क्योंकि दादी न तो चल-फिर ही सकती हैं और न ही अपना कोई काम ही स्वयं कर सकती हैं। उनके लिए तो चौबीसों घंटे एक अटेंडेंट चाहिए। दिन में उनकी सहायता के लिए एक सहायिका रखी हुई है और रात के समय मम्मी और घर के अन्य सदस्य उनकी देखभाल करते हैं। ऐसी स्थिति में उनको तेलंगाना ले जाना मुश्किल ही नहीं असंभव था।

''क्यों न भाई के ठीक होकर लौटने तक दादी को बुआ के पास भेज दिया जाए ?'' बहुत सोच-विचार करने के बाद मेरे मन में ये विचार आया। जब दादी से इस बारे में बात की तो उन्होंने बुआ के घर जाने से साफ मना कर दिया। कारण स्पष्ट था। दादी बुआ के घर का पानी तक नहीं पीतीं फिर इतने दिनों तक वहाँ रहना कैसे संभव होगा ? रात और दिन दो शिफ़्टों में नर्स अथवा सहायिकाओं की व्यवस्था की जा सकती थी लेकिन खाना ? मुझे याद है दादी ने एक बार ग़लती से बुआ के द्वारा लाए गए फलों में से एक सेब खा लिया था। जब उन्हें इस बात का पता चला तो वे बहुत परेशान हुईं। कहा कि मेरा उम्र भर का व्रत भंग हो गया। उस एक सेब के ही नहीं पूरे फलों की क़ीमत से कई गुना पैसे बुआ को देने के बाद भी महीनों तक उनकी परेशानी कम नहीं हुई। एक तरह से वे एक प्रकार के अपराध-बोध से ग्रस्त रहने लगीं।

ऐसे में उन पर बुआ के यहाँ जाने के लिए ज़ोर डालना ठीक नहीं लगा। लेकिन अन्य कोई उपाय न होने से भाई की बीमारी का वास्ता दिया। जब भाई की बीमारी का वास्ता दिया तो दादी कहने लगीं, '' भगवान मुझे उठा ले और मेरे पोते को ठीक कर दे पर आख़िरी वक़्त में बेटी के घर मत भेज।'' इस पर मैंने दादी से कहा, ''दादी हमारे या तेरे ऐसा सोचने से कुछ नहीं होगा। इस समय भाई को हम सब की ज़रूरत है। हम सबको उसके पास जाना ही होगा। और तेरी हालत सफर करने और हमारे साथ जाने की होती तो हम सबसे पहले तुझे ही अपने साथ ले जाते।'' दादी चुप हो गईं तो मैंने कहा, '' दादी तुझे अपनी ज़िद प्यारी है या भाई की ज़िंदगी ?'' ये सुनना था कि दादी मोम की तरह पिघल गईं। कहने लगीं, '' बेटा श्रुति ! तू जहाँ कहेगी मैं वहाँ रह लूँगी। तुम सब जाओ और मेरे पोते को जल्दी से अच्छा करके मेरे पास ले आओ।''

सीताराम गुप्ता
प्रीतम पुरा, दिल्ली

प्रेरक व्यक्तित्व
जीना इसी का नाम है

छोटी छोटी मुलाकातें जीवन में गहरा असर छोड़ जाती हैं। उन्ही मुलाकातों में विष्णु भट से मुलाकात भी शामिल है। विष्णु भट, श्री प्रभाकर भट (पी जी इलेक्ट्रॉनिक्स) नामी इंजीनियर के सुपुत्र हैं। विष्णुजी शारीरिक और मानसिक रूप से सक्षम न होते हुए भी एक अनोखे व्यक्तित्व के मालिक हैं।

दृष्टि दोष होने के बावजूद भी मन की आँखों से सब देख लेने की क्षमता उनमे है। उन्होंने माता पिता की सहायता से दसवीं की परीक्षा पास की है।

सीखने जैसी बात यह है की वे अपनी परिस्थिति से कभी दुखी नहीं होते। कभी किसी से शिकायत नहीं करते। आत्मनिर्भर बनने के लिए उन्होंने अपनी सोसाइटी में एक

प्रोविज़न की दुकान लगायी है जहाँ वह नियमित अपने सहायक के साथ जाते हैं। टेलीविज़न देखना, समाचार सुन्ना और स्विमिंग उनका शौक है। मुझसे मिलने के बाद वह रोज़ मुझे याद करते हैं और अगली मुलाकात का इंतज़ार करते हैं। दुनिया में ऐसे निस्वार्थ प्रेम करनेवाले कम ही होते हैं। कुछ बातें हमारे बस में नहीं होती, उनसे परेशान रहना , दूसरों को दुखी करना गलत है। छोटी छोटी खुशियां उनके जीवन में बड़ा स्थान रखती हैं। घर में किसी मेहमान का आना उनके लिए दिवाली के समान होता है। उम्मीद उसके जीवन की बहार है, घर का बगीचा, फूलों पर बैठनेवाली तितली, तोता, चिड़िया, सभी की उन्हें प्रतीक्षा रहती है। " भाई मेरे बगीचे से फूल मत तोडना, सिर्फ देखना" सुनकर मेरा मन पुलकित हो उठता है।

इसी वर्ष उन्होंने अपनी माँ को खोया है परन्तु उनकी सभी अच्छी बातें और सीख रोज़ दोहराते हैं, हताश नहीं होते , जीवन की सच्चाई से वाकिफ हैं। उनसे मिलकर यही सोचती हूँ.....जीना इसी का नाम है ।

श्रीमती रजनी विजय थानवी
कवयित्री व लेखिका, मुंबई

मकान

कल अपनी पुरानी सोसाइटी में गया था। वहां मैं जब भी जाता हूं, मेरी कोशिश होती है कि अधिक से अधिक लोगों से मुलाकात हो जाए। लोगों से उनकी खैरियत पूछ रहा था। तभी मोटरसाइकिल पर एक आदमी आया और उसने झुक कर प्रणाम किया।

"भइया प्रणाम" मैंने पहचानने की कोशिश की। बहुत पहचाना-पहचाना लग रहा था। पर नाम याद नहीं आ रहा था। उसी ने कहा, "भैया पहचाने नहीं ? हम बाबू हैं, बाबू। उधर वाली आंटीजी के घर काम करते थे।"

मैंने पहचान लिया। अरे ये तो बाबू है। सी ब्लॉक वाली आंटीजी का नौकर। अरे बाबू तुम तो बहुत तंदुरुस्त हो गए हो। आंटी कैसी हैं ? बाबू हंसा, 'आंटी तो गई।" गई कहां गईं ? उनका बेटा विदेश में था, वहीं चली गईं क्या ? ठीक ही किया, उन्होंने। यहां अकेले रहने का क्या मतलब था ?

अब बाबू थोड़ा गंभीर हुआ। उसने हंसना रोक कर कहा, " भइया , आंटीजी भगवान जी के पास चली गई।" "भगवान जी के पास ? ओह! कब ?" बाबू ने धीरे से कहा, ' दो महीने हो गए।" क्या हुआ था था आंटी को ?

"कुछ नहीं । बुढ़ापा ही बीमारी थी। उनका बेटा भी बहुत दिनों से नहीं आया था। उसे याद करती थीं। पर अपना घर छोड़ कर वहां नहीं गईं। कहती थीं कि यहां से चली जाऊंगी तो कोई मकान पर कब्जा कर लेगा। बहुत मेहनत से ये मकान बना है।" "हाँ, वो तो पता ही है। तुमने खूब सेवा की। अब तो वो चली गईं। अब तुम क्या करोगे ?" अब बाबू फिर हंसा, "मैं क्या करुंगा भैया ? पहले अकेला था। अब गांव से फैमिली को ले आया हूं। दोनों बच्चे और पत्नी अब यहीं रहते हैं।" "यही मतलब उसी मकान में ?"

"जी भैया। आंटी के जाने के बाद उनका बेटा आया था। एक हफ्ता रुक कर चले गए। मुझसे कह गए हैं कि घर देखते रहना। चार कमरे का इतना बड़ा फ्लैट है। मैं अकेला कैसे देखता ? भैया ने कहा कि तुम यहीं रह कर घर की देखभाल करते रहो। वो वहां से पैसे भी भेजने लगे हैं। और सबसे बड़ी बात ये है कि मेरे बच्चों को यहीं स्कूल में एडमिशन मिल गया है। अब आराम से हूं। कुछ-कुछ काम बाहर भी कर लेता हूं। भैया सारा सामान भी छोड़ गए हैं। कह रहे थे कि दूर देश ले जाने में कोई फायदा नहीं।" मैं हैरान था। बाबू पहले साइकिल से चलता था। आंटी थीं तो उनकी देखभाल करता था। पर अब जब आंटी चली गईं तो वो चार कमरे के मकान में आराम से रह रहा है। आंटी अपने बेटे के पास नहीं गईं कि कहीं कोई मकान पर कब्जा न कर ले। बेटा मकान नौकर को दे गया है, ये सोच कर कि वो रहेगा तो मकान बचा रहेगा। मुझे पता है, मकान बहुत मेहनत से बनते हैं। पर ऐसी मेहनत किस काम की, जिसके आप सिर्फ पहरेदार बन कर रह जाएं ? मकान के लिए आंटी बेटे के पास नहीं गईं। मकान के लिए बेटा मां को पास नहीं बुला पाया। सच कहें तो हम लोग मकान के पहरेदार ही हैं।

जिसने मकान बनाया वो अब दुनिया में ही नहीं है। जो हैं, उसके बारे में तो बाबू भी जानता है कि वो अब यहां कभी नहीं आएंगे। मैंने बाबू से पूछा कि, "तुमने भैया को बता दिया कि तुम्हारी फैमिली भी यहां आ गई है ?" "इसमें बताने वाली क्या बात है भैया ? वो अब कौन यहां आने वाले हैं ? और मैं अकेला यहां क्या करता ? जब आएंगे तो देखेंगे। पर जब मां थीं तो आए नहीं, उनके बाद क्या आना ? मकान की चिंता है, तो वो मैं कहीं लेकर जा नहीं रहा। मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।"

बाबू फिर हंसा। बाबू से मैंने हाथ मिलाया। मैं समझ रहा था कि बाबू अब नौकर नहीं रहा। वो मकान मालिक हो गया है। हंसते-हंसते मैंने बाबू से कहा, "भाई, जिसने ये बात कही है कि मूर्ख आदमी मकान बनवाता है, बुद्धिमान आदमी उसमें रहता है, उसे ज़िंदगी का कितना गहरा तज़ुर्बा रहा होगा। बाबू ने धीरे से कहा, साहब, सब किस्मत की बात है। मैं वहां से चल पड़ा था ये सोचते हुए कि सचमुच सब किस्मत की ही बात है। लौटते हुए मेरे कानों में बाबू की हंसी गूंज रही थी।

"मैं मकान लेकर कहीं जाऊंगा थोड़े ही ? मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं। मैं सोच रहा था, मकान लेकर कौन जाता है ? सब देखभाल ही तो करते हैं।" आज यह किस्सा पढ़कर लगा कि हम सभी क्या कर रहे है, जिन्दगी के चार दिन है मिल जुल कर हँसतें हँसाते गुजार ले। क्या पता कब बुलावा आ जाए। इस धरा का इसी धरा पर, सब धरा रह जायेगा।

प्रस्तुति - अजय जिंदल
समाजसेवी व व्यवसायी, मुंबई

होमवर्क

स्टाफ रूम से डायरेक्टर साहेब के कमरे की और बढ़ते हुए दिनेश सर बस यही सोच रहे थे कि आज़ स्कूल का आखिरी दिन है। सभी टीचर उनके लिए दुआ कर रहे थे लेकिन वो अपने मन को लगभग आश्वस्त कर चुके थे कि उनका स्कूल से निकलना अब तय है। अपना त्यागपत्र भी उन्होंने लिख कर जेब में डाल रखा था। प्रिंसिपल ने उन्हें अपने कमरे में बुलाने के बजाय डायरेक्टर के कमरे में ही जाने का संदेश भेजा था। दिनेश सर खुद से बार बार सवाल कर रहे थे कि क्या उस पुलिस अधिकारी के बेटे को काम नहीं करने पर डांटना उनकी गलती थी ? लेकिन जवाब हां नहीं मिल रहा था। वह पिछले महीने ही इस स्कूल में आए थे। उस बच्चे ने भी इसी साल स्कूल में प्रवेश लिया था। उच्च अधिकारी का बेटा होने के कारण सभी शिक्षक उसे कुछ नहीं बोलते थे। काम अधूरा होने पर दूसरे बच्चों की नोटबुक दिला देते या किसी बच्चे से ही उसका काम करवा देते। दिनेश सर ने इस प्रथा को नहीं निभाया। उनका कहना था कि ऐसा करने से अर्पित कभी भी आत्मनिर्भर नागरिक नहीं बन पाएगा। वह स्कूल की परीक्षाओं में तो उत्तीर्ण हो जायेगा किंतु जीवन की परीक्षा में कभी सफल नहीं हो पाएगा। इसलिए आवश्यक है कि दूसरे विद्यार्थियों की भांति उसे भी एक सामान्य छात्र समझा जाए। लेकिन कोई भी शिक्षक उनकी बात से सहमत नहीं था। प्रिंसिपल सर दो बार दिनेश सर को अपने कार्यालय में बुलाकर अर्पित पर विशेष ध्यान देने के लिए बोल चुके थे। यही कारण था कि वो डायरेक्टर के कमरे में जाने से पहले ही त्यागपत्र लिख चुके थे।

डायरेक्टर सर ने उन्हें अपने सामने पड़ी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। अर्पित के माता पिता उसके साथ सामने सोफे पर बैठे थे। "दिनेश सर, अर्पित के पिता चाहते हैं कि आप शाम के समय एक घंटा उसे गणित पढ़ा दिया करें। वह आपके घर भी आ जायेगा या स्कूल में छुट्टी के बाद रुक जायेगा। आपकी जैसी सुविधा हो बता दें।" दिनेश सर हैरान थे। खुद से सवाल जवाब करने के चक्कर में भूल ही गए कि उन्हें जवाब भी देना है। उन्हे चुप देखकर अर्पित उनके पास आया। कान पकड़कर बोला ,"सर, मैं अब रोज़ होमवर्क करूंगा। प्रोमिस। लेकिन मुझे होमवर्क करना नहीं आता है। आप मेरी बात का विश्वास कीजिए।" दिनेश सर के बोलने से पहले ही उसकी मम्मी बोली, "सर, हम आपके आभारी हैं कि आपने हमारे बेटे को काम नहीं करने के लिए डांटा है। इससे पहले टीचर खुद ही उसका काम कर देते थे। अर्पित चाहता है कि वो सभी प्रश्न करे जो आपके आने से पहले इसने खुद नहीं किए हैं।" दिनेश सर कुछ बोलना चाहते थे तभी उसके पिता उठकर उनके पास आए ,"सर, आप अगर अर्पित को पढ़ाएंगे तो हम जीवन भर आपके अहसानमंद रहेंगे।" कहकर उन्होंने अपने हाथ जोड़ दिए।

दिनेश सर ने हाथ जोड़कर उनसे कहा, "सर, आपसे मिलकर अधिकारियों के विषय में मेरी धारणा बदल गई है। आप निश्चिंत रहें। अर्पित मेरा विद्यार्थी है। उसे गणित में निपुण बनाना अब मेरा काम है।" डायरेक्टर सर से अनुमति लेकर दिनेश सर बाहर आ गए। अर्पित भी उनके पीछे पीछे चल रहा था। कक्षा में पहुंचे तो बच्चों ने ताली बजाकर उनका स्वागत किया। वे समझ चुके थे कि सच्चाई की ही जीत हुई है। एक गलत प्रथा खत्म हो गई है।

अर्चना त्यागी
जोधपुर राजस्थान

नजरिया

बचपन से ही बहुत तेज - तर्रार थी शगुन। चार साल की उम्र से ही उसे लोगो का ध्यान अपनी ओर खींचना आ गया था। ऊर्जा से भरपूर कुछ ना कुछ करते रहना उसकी फितरत बन गई थी। चाहे गलत हो या सही, जोड़ना, तोड़ना, बनाना, बिगाड़ना फिर बना देना यही सब चलता ही रहता था। माता- पिता को भी उसके अंदर एक सामान्य से कहीं अधिक बुद्धिमान बच्चा नज़र आता जिसको प्रदर्शित करने का वो दोनो मात पिता ही कोई मौका गलती से भी नही चूकते थे। मित्रो, जानकारो के सामने उसके चित्रो का बखान हो या कोई नया क्राफ्ट, बडचढ कर उसकी प्रशंसा की जाती। शगुन भी अब इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि उसे हर समय प्रशंसा आवश्यक हो गई। कोई अगर प्रशंसा ना करे तो वो नाराज और चिड़चिडी हो जाती। उसे लगने लगा की बस वो ही सबसे बेहतर है और वो ही सबकुछ जानती है।

दस साल की होते होते पढाई मे अपनी प्रभुता रखते अब वो अन्य बच्चो के अलावा टीचर्स को भी कमतर आंकने लगी थी। पढाती टीचर्स को बीच मे टोकना और अपनी महत्ता दर्शाती बात को बेमौके रखने से उससे टीचर्स परेशान होने लगे। पर अच्छे अंक सफलता और बेहतरी का मापदंड होना शगुन की सभी गलतियाँ ढापने के लिए काफी था। 'मै अच्छी हू' से 'मै ही अच्छी हूँ' के भाव ने कब मजबूती से व्यवहार मै जगह बना ली इसका आभास भी शायद शुभदा को नही हो पाया। किशोरावस्था से व्यस्क होने तक उसके 'अटेंशन सीकर' का भाव भी व्यस्क हो चुका था।

पहले से ही तय लक्ष्य की प्राप्ति मे एक कदम आगे बढाते उसने भौतिक शास्त्र मे स्नातक होने के लिए दिल्ली के नामी कालेज मे प्रवेश ले लिया था। खोजी और जिज्ञासु मन ने एक नामी वैज्ञानिक बनने की ठान ली थी। अपने को सबसे बेहतर मानने वाली शगुन को नए माहौल और लोगो के साथ तालमेल बिठाने मे काफी मुश्किल पेश आने लगी। वंहा सब एक से बढ़कर एक काबिल और तेज दिमाग लोगो का समंदर था जो शगुन जैसे छोटे से पोखर का ध्यान खींचने मे असमर्थ था। 'सेंटर आफ अटरेक्शन' रहने की आदि शगुन के लिए यह एक बहुत ही असहज स्थिति थी। आते ही अपने झंडे गाड देने का ख्वाब लेकर आई छोटे शहर की लडकी के लिए यह किसी गहरे दुख से कम नही था।

वाह वाह और शाबाश सुनने के आदि कान अब उसके आगे बढ़कर किए मित्रता प्रस्ताव पर भी उपहास के शब्दो से आहत हो रहे थे। रोज शाम को अपने माता पिता से फोन पर भड़ास निकालने उसे एक महिने से ज्यादा हो गया था पर पांच हजार विद्यार्थियो के विश्वविद्यालय मे वो सिर्फ एक मित्र बना पाने मे सफल हो पाई थी और वो भी उसकी रूम पार्टनर थी इसलिए उसके साथ वक्त गुजारना इच्छा से ज्यादा मजबूरी थी। सीमा दक्षिण भारतीय, कम बोलने वाली लडकी थी। शांत मिजाज और चेहरे पर सदा दिखने वाली मंद मुस्कान उसकी पहचान थी। शगुन की बाते वो बडे ध्यान से सुनती और बहुत कम शब्दो मे अपनी बात को कह लेती थी। शगुन भी आश्चर्य करती की यह फोन पर अपने परिवारजन से बात करते कभी भी ऊंची आवाज नही करती। हमेशा खुशमिजाज रहना, गुनगुनाते हुए काम करना, आगे बढकर लोगो की मदद करना जैसे काम से शगुन यकीन नही कर पा रही थी कि कोई इतना सहज कैसे रह सकता है। उसको कमतर आंकते वो अक्सर उस पर अपना हुक्म चलाने का प्रयास करती। सीमा सरल रहते या तो उसकी बात मान लेती या हंसी मे ऐसे टालती की शगुन को बुरा भी नही लगता। शगुन अपने पूर्व की उपलब्धियो के बखान उसके सामने कर अपनी तारीफ सुनने को बेताब रहती पर सीमा उसके मनमुताबिक प्रतिक्रिया नही देती तो वो और बैचेन हो जाती।

रविवार की छुट्टी के दिन दोनो शहर घूमने और जरूरी सामान खरीदने चले गए। शगुन ने कुछ मंहगी पोशाक खरीदी तो सीमा ने चयन करने मे उसकी मदद कर दी पर अपने लिए कुछ ना लिया। स्टेशनरी की दुकान से जब सीमा ने अपने लिए दो बडे केनवास और रंग खरीदे तो शगुन आश्चर्य से बोली,ठ अरे तुम भी पेन्टिंग करती हो, तुमने कभी बताया नही ? चलो मै भी एक कैनवास ले लेती हूँ। ठ रात का भोजन कर शगुन तो थककर सो गई, पर सीमा ने अपनी चित्रकारी शुरू कर दी। चार घंटे लगातार शांत वातावरण और शांत मन ने एक दौडते श्वेत अश्व का नयनाभिराम चित्र लगभग तैयार कर लिया। सुबह शगुन सोकर उठी तो चित्र देखकर दंग रह गई। उसे विश्वास नही हुआ कि एक रात मे इतनी सुंदर पेन्टिंग भी कोई बना सकता है। सीमा के जगते ही उसने शिकायत की, तुम इतना अच्छा पेन्टिंग करती हो और तुमने कभी जिक्र भी नही किया ?ठ सीमा होले से मुस्कुराते हुए बोली,ठ तुम अपने बारे मे इतनी मशगूल रही कि मुझे सुनने का तुम्हारा मन कभी नज़र ही नही आया। जैसा तुम बताती हो , तुम भी बहुत अच्छी चित्रकारी करती ही होंगी।ठ ठ हां , पर तुम्हारा तो बेहतरीन हाथ है।ठ शगुन को आज पहली बार कमतरी का अहसास हो रहा था। अगले एक हफ्ते तक उस चित्र पर सीमा ने काम कर उसे एकटक देखने लायक बना दिया तो शगुन को अपने अंदर किसी हमउम्र के लिए पहली बार सम्मान के भाव महसूस हुए। अब वो सीमा पर हावी होने के प्रयास को छोड़कर सार्थक चर्चा करती। जैसे जैसे वो उसकी बारे मे जानती गई वैसे वैसे उसे अपने ठमै ही सर्वश्रेष्ठ ठ के भाव से मुक्त होती गई।

पहला सेमेस्टर पूरा हो चुका था। शगुन पहले दस मे भी नही थी और सीमा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया था। क्लास के सभी लोगो ने अपने घर जाने से पहले एक छोटी सी पार्टी रखी थी। जब सीमा ने एक सुंदर लोकगीत गाया सभी दंग रह गए। सधा कंठ और सधा स्वर, शगुन अब पूरी तरह सीमा की मुरीद हो चुकी थी। उससे पूरे उल्लास और स्नेह से जब सीमा को गले लगाया तो खुद उसे अपने दंभ की बर्फ पिघलती सी नज़र आयी। कमरे पर सामान पेक करते बातचीत से उसे नई बात पता चली कि सीमा एक प्रशिक्षित कत्थक नृत्यांगना है। इतनी सारी खूबीया, और इतनी सरल शगुन अब भी यकीन नही कर पा रही थी। सीमा के स्वभाव और पांच महीने की संगत ने शगुन को आत्मावलोकन करना तो सिखा ही दिया था। पांच महीने बाद माता पिता भी घर लौटी नई शगुन को देख अचंभित थे जिसमे आत्मविश्वास बेशक थोडा कम था पर जीवन को सकारात्मक नजरिए से देखने का व्यस्क भाव पूरी तरह दृष्टिगोचर था जो अबतक दिखने से नदारद था।

संदीप पांडे
अजमेर, राजस्थान

रोटरी क्लब मुंबई नॉर्थ एण्ड
द्वारा
मानव सेवा में मुफ्त संचालित विविध उपक्रम
- सोनोग्राफी व २डी इको की जाँच की सुविधा
- वैद्यकीय सहायता
- मोतिया बिंद का आपरेशन
- पाइल्स, साइनस व स्टोन का नेचरोपैथी द्वारा इलाज
- लेप्रोस्कोपी और डागनोस्टिक टेस्ट
- ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर की सुविधा

डॉ. जे.बी. अग्रवाल
ट्रस्ट चेयरमैन

राज तेजवानी
अध्यक्ष

रमेश अग्रवाल
मेडिकल डायरेक्टर

अलका भंडारी
क्लब सेक्रेटरी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
मोबाइल-नं. 9820523330 / 9833232327

रोटरी क्लब ऑफ वेस्ट एण्ड के अध्यक्ष हुए सम्मानित

हाल ही में आयोजित विभिन्न समारोह में रोटरी क्लब के अध्यक्ष रो. विशाल सेठी को सम्मानित किया गया।

वर्ष २०२१-२२ की रोटरी डिस्ट्रिक्ट ३१४१ का स्लोगन ड्रीम का सुझाव देने के लिए पूरी टीम के साथ ही साथ उन्हें ही सम्मानित करते हुए डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. राजेंद्र अग्रवाल, पूर्व गवर्नर सुभाष कुलकर्णी, डॉ बाल ईनामदार तथा साथ में अरुण भार्गव, दिलीप मुळे, बालमोहन राशिवासिया व संदीप केडिया।

राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में महाराष्ट्र के राज्यपाल मा. श्री भारत कोश्यारी के करकमलों से सम्मान ग्रहण करते हुए रोटरी क्लब ऑफ वेस्ट एण्ड के अध्यक्ष रो. विशाल सेठी साथ में रोटरी गवर्नर डॉ. राजेंद्र अग्रवाल

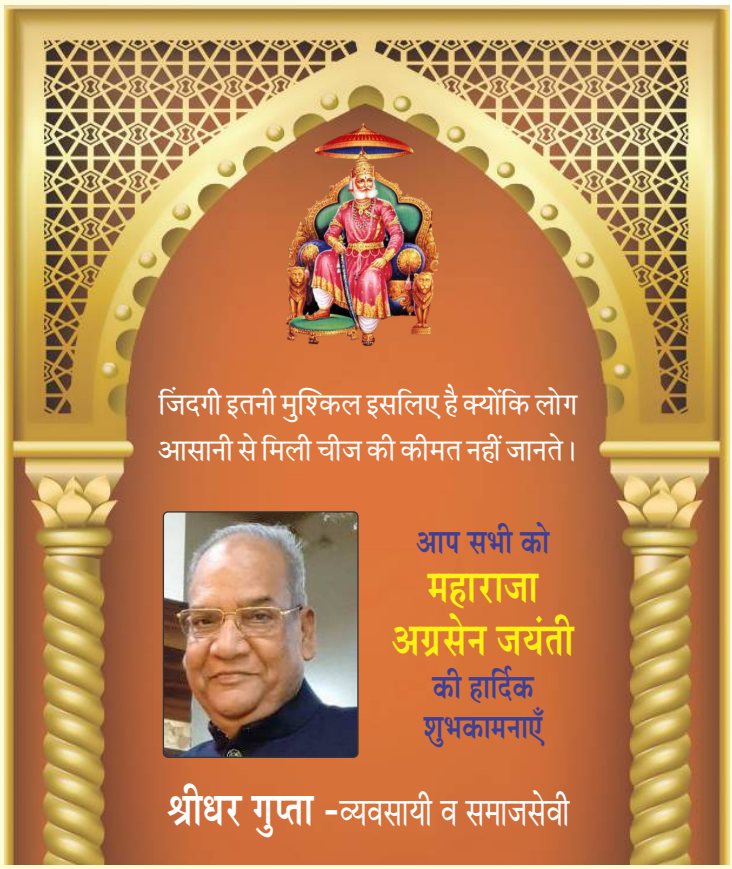

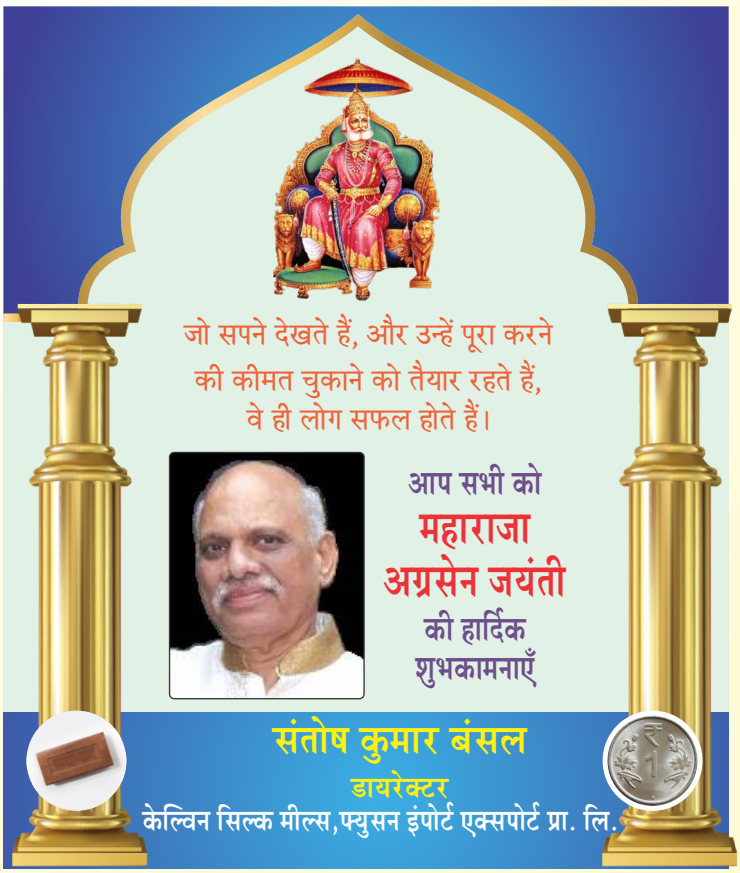

रोटरी क्लब ऑफ मुंबई नॉर्थ एण्ड द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा में पहल

क्लब की तरफ से पर्यावरण सुरक्षा व जल संरक्षण के तहत अनिल मोहिले पब्लिक गर्डन, अंधेरी (प) व कैफे आजमी गार्डन, जुहू में रेन वाटर हार्वेस्टिंग प्रोजेक्ट किया गया। साथ ही साथ आरे कॉलोनी में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर नगरसेवक रोहन राठोड, नगरसेविका श्रीमती सुधा सिंह, टीवी एक्टर पंकज झा, मिशन ग्रीन मुंबई के सभाजीत मुखर्जी सहित क्लब के अध्यक्ष राज तेजवानी, सेक्रेटरी अलका भंडारी, प्रोजेक्ट चेयरमैन लीला जया, क्लब के सदस्य संदीप केडिया, अरुण बगाडिया, विजय बांकड़ा, अनूप तेजवानी, धनंजय कदम, दिलीप जया, डॉ. जुगल अग्रवाल, निरंजन झुनझुनवाला, हेमांगिनी ब्रह्मचारी, राम दत्त ब्रह्मचारी, बिमल बाजोरिया, रमाकांत टिबड़ेवाल, प्रवीण गुप्ता, श्रीमती कविता तेजवानी, श्रीमती आशा बांकड़ा, श्रीमती सुधा गुप्ता सहित रोटरैक्टर व अन्य क्लब के सदस्यों ने उपस्थित रहकर इस प्रोजेक्ट में अपना योगदान दीजिए।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम

नेहरू युवा केंद्र मुंबई के तत्वाधान में भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष आजादी अमृत महोत्सव के उपलक्ष में फिट इंडिया फ्रीडम रन २ फिटनेस का डोज आधा घंटा रोज भारत माता की जय महाराष्ट्र स्टेट डायरेक्टर प्रकाश कुमार मुनरे डेप्युटी डायरेक्टर कविता श्रीवास्तव जी. प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर भारत के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुकेश शर्मा, राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम कुमार, घाटकोपर भटवाड़ी की नगरसेविका रितु तावडे मधुरा तावडे, योग गुरु राधे श्याम, मदन घाडगे, भावना, कल्पना, राम पाल सहित सैकड़ों की संख्या में लोगों ने इस समारोह में सरीक हुए। प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर भारत अभियान संगठन ने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राम पाल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया और देश के विकास में योगदान देने का आवाहन किया।

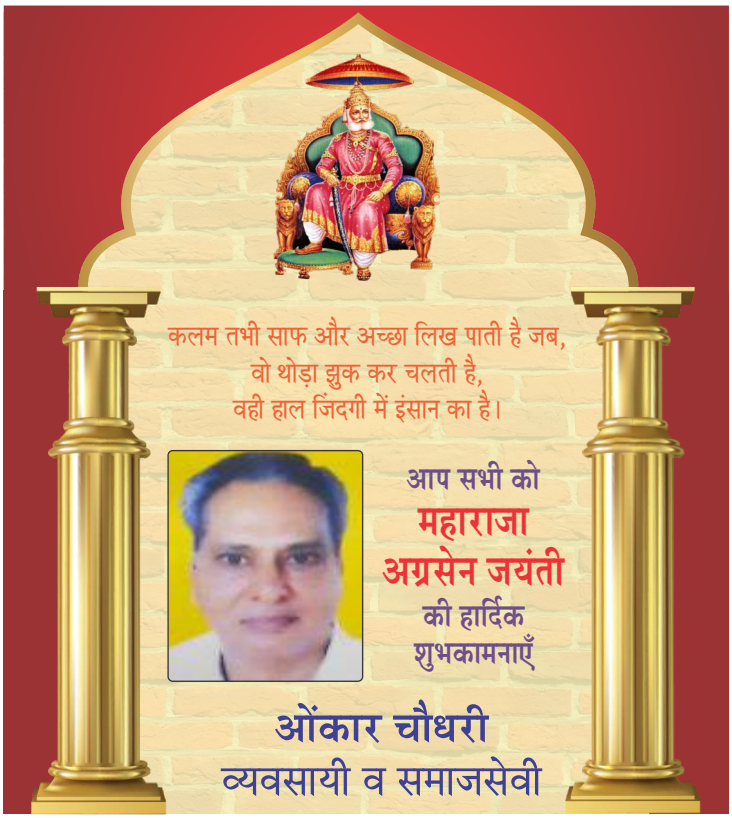

शिक्षा और अध्यात्म

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में लिखा गया है, 'येन विमुक्तये सा शिक्षा' अर्थात जो सांसारिक बन्धनों से मुक्त करे वही शिक्षा है। वर्तमान परिवेश में मैकाले शिक्षा पद्धति के अनुगामी हम समझते हैं कि जिस विधी से अधिक धनोपार्जन हो वही सार्थक शिक्षा है। हम पाश्चात्य भाषा,सभ्यता और संस्कृति का बहुत सम्मान करते हैं और उसे अपनाने के लिए लालायित रहते हैं जबकि भारतीय सभ्यता ,दर्शन, अध्यात्म तथा संस्कृति की प्रतीक संस्कृत भाषा को मृतक कहने में तनिक भी संकोच नहीं महसूस करते।

महत्वाकांक्षा की ललक के कारण भीषण रक्तपात हुआ है। वासना की अग्नि ने अनगिनत अबलाओं को झुलसाया है। धार्मिक उन्मादता के कारण मानवता आहत हुई है। मानव स्वयं को और वातावरण को अपने कुकृत्यों से दूषित कर चुका है। इन सबके मूल में हमारी तीव्रतम भौतिक लिप्सा है, जो आधुनिक शिक्षा की देन है। शिक्षा स्वयं अपने स्वरूप को खो चुकी है। अध्यात्म के अभाव में यह एक लाश बन चुकी है। इसमें से मात्र दुर्गन्ध ही आ सकती है।

अध्यात्म दो शब्दों के योग से बना है- अधि और आत्म। ' अधि ' का अर्थ होता है 'जानना' और ' आत्मश् का संबंध आत्मा से है। अर्थात ' आत्मा को जानना। बहुत बड़े षड्यन्त्र के तहत इसी अध्यात्म को शिक्षा से अलग कर दिया है। जिससे आज का शिक्षा जगत न तो कोई वशिष्ठ पैदा कर सकता है, न कोई विवेकानंद पैदा कर सकता है और न ही कोई ऐसा महापुरूष पैदा कर सकता है जो विश्व को एक नई दिशा दे सके। यह केवल माइकल जैक्शन के वंशजों की परम्परा को कायम रखने में समर्थ है। वर्तमान समय में जहाँ जहरीले जीवाणु फैल चुके हैं, कश्मीर की वादियों में बारूदी गन्ध है, गंगा और यमुना की पावन धारा हमारे कुकृत्यों से दूषित है, प्रजा वत्सल राजनीति विषकन्या की आत्मजा बन चुकी है, शहीदों की चिताओं पर विलासिता का महल खड़ा किया जा रहा है, किलकारियाँ घुट रही हैं। और ईमानदारी महत्वाकांक्षा के कारण भौतिकता की अँधेरी गली में खो गयी है, वहीं अध्यात्म बाह्य आडम्बर का विषय बनता जा रहा है, जिससे राष्ट्रीय भावना स्वार्थ के घुमावदार चक्कर में उलझ कर रह गयी है।

शिक्षित बेरोजगार नवयुवक हताश और निराश हैं। वे या तो आत्महत्या कर रहे है या अपराध जगत में प्रवेश कर रहे हैं। क्या इसके लिए प्रशासन दोषी है या उसमें अध्यात्म नगण्य है ? वास्तविकता यह है कि उनकी शिक्षा में अध्यात्म का मिश्रण नहीं है।यदि राष्ट्रीय भावना की जागृति लोगों में करनी है तो पाश्चात्य पद्धति पर आधारित इस शिक्षा व्यवस्था को बदलना पड़ेगा । एक आध्यात्मिक व्यक्ति अपने राष्ट्र के प्रति गद्दारी नहीं कर सकता। वह कभी भी गरीबों के निवाले नहीं छिनेगा,कभी भी राष्ट्र के सुरक्षा के साथ सौदा नहीं करेगा, कभी भी मासूमों के रक्त से हाथ नहीं धोयेगा,कभी भी विदेशी उद्योगों को अपने राष्ट्र में स्थापित करने का न्यौता नहीं देगा। उसमें हमेशा अदम्य साहस और आत्मविश्वास झलकेगा।

जिस प्रकार एक बूँद से सागर बनता है और कण- कण से पर्वत बन जाता है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति से राष्ट्र का निर्माण होता है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर शक्ति के पुंज, प्रकाश, सत्य और आनंद का केन्द्र है। उसी को जानना,समझना और उसे व्यावहारिकता के स्तर पर उतारना ही सच्चे अर्थे में अध्यात्म है। आन्तरिक शक्ति की प्रखरता ही सच्चा देशप्रेमी बनाती है।

प्राचीन काल में विद्यार्थियों को बचपन में ही गुरूकुल में भेज दिया जाता था।विद्या अध्ययन के पश्चात वह बाह्य जगत से अवगत होता था किन्तु आज छात्रों के हाथ में खुला विश्वविद्यालय है जिससे उनमें आपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं क्योंकि बाह्य वातावरण उसे बुद्धिप्रधान और भावहीन बना रहा है।उनके अन्दर से त्याग, दया ,करूणा आदि भावनाएँ समाप्त हो रही हैं। ऐसे में शिक्षक के सामने स्थिति बड़ी ही चुनौतिपूर्ण है।

भारतीय मनीषियों को यह ज्ञात था कि यदि शिक्षा मात्र उद्योग और व्यवसाय पर केन्द्रित हो गयी हो तो इसमें से ' असतो मा सद्गमय ' तथा ' तमसो मा ज्योतिर्गमय ' की भावना हो जायेगी। लोग भौतिकता के पीछे विवेकशून्य होकर अपने अस्तित्व को ही समाप्त करने में तुल जायेंगे। डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस विषय में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा था ठ यदि हम केवल औद्योगिक और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देकर आध्यात्मिक शिक्षा की उपेक्षा करेंगे तो सामाजिक बर्बरता तथा पैशाचिकता की उत्पत्ति में देरी न रह जायेगी। ठ महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद आदि महापुरूषों ने भी शिक्षा को अध्यात्म से जोड़ने पर बल दिया है किन्तु आज हम दिग्भ्रमित हैं।

आधुनिक विज्ञान को अपनाने में लोग इतने तल्लीन हो चुके हैं कि इसके दुष्परिणामों को नजर अंदाज कर चुके हैं। वे भूल गये हैं कि उनके बच्चे जब इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के यन्त्रों को संचालित करते हैं तो उनकी कोमल त्वचा पर विकिरण का घातक प्रभाव पड़ता है और उनकी स्मरण शक्ति भी कमजोर होती जाती है। उन्हीं बच्चों की उच्च महत्वाकांक्षा का प्रतिफल जब भविष्य में नहीं निकलता है तो वे युवा वर्ग या तो आत्महत्या करते है या निराशा की अग्नि में जलते हुए आतंकवाद का सहारा लेने लगते है।इस स्थिति तक उन्हें पहुँचाने का श्रेय शिक्षक समुदाय, अभिभावक गण तथा पूरे समाज को है जो अध्यात्म को बाह्य आडंबर का विषय बनाया हुआ है और इसे विकास के लिए गतिशून्य और दिशाहीन मानता है।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है अवश्य, किन्तु यदि यह आवश्यकता बाह्य जगत की होगी तो भौतिकता का आकर्षण बढ़ेगा जबकि अन्तर्मुखता पर अध्यात्म का। भौतिक लिप्सा मानव को पतन की तरफ अग्रसित करती है जबकि अध्यात्म एक विवेकमय संतुलन स्थापित करता है, जिससे रामराज्य की कल्पना सार्थक होती है। आध्यात्मिकता के अभाव में हम विज्ञान की तलवार से अबोध बालक की तरह खेल रहे हैं। अध्यात्म में ही वह शक्ति है जिसे शिक्षा से जोड़कर विज्ञान को शिवता की तरफ उन्मुख करके सम्पूर्ण परिदृष्य को सकारात्मकता की तरफ मोड़ा जा सकता है और ' वसुधैव कुटुम्बकम् ' की कल्पना साकार की जा सकती है।

आजकल लोग विज्ञान की भाषा आसानी से समझते हैं। उसे ही सत्य माना जाता है जिसे विज्ञान प्रमाणित करता है। विज्ञान यदि बाह्य जगत का वर्णन करता है तो अध्यात्म अन्तर्गत का किन्तु बाह्य जगत का भी अध्ययन करने के लिए अन्तर्मुख होना ही पड़ता है, क्योंकि बाह्य जगत अन्तरात्मा का ही विस्तार है। इसलिए विज्ञान अपने उद्भवस्थल (अध्यात्म) से अलग हो जायेगा तो इसका विनाश की तरफ उन्मुख होना निश्चित है। देश ,काल तथा वातावरण के अनुसार अध्यात्म तथा विज्ञान का सन्तुलन परमावश्यक है। इसके अभाव में किसी भी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास अधूरा है। जिस राष्ट्र की हवा,मिट्टी, प्रकाश और नमक खाकर हम फले- बढ़े उसके प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य हैं। उसका निर्वाह करना हमारा परमधर्म है। इसके ऋण से हम तभी मुक्त हो सकते हैं जब वैयक्तिक रूप से अध्यात्म की ज्योति को जलाकर अन्ततिमिर मिटायें और दूसरों को इसके लिए प्रेरित करें।

आइये शिक्षा को अध्यात्म का विशाल आधार प्रदान करें जिससे नई पीढ़ी में ' सर्वे भवन्तु सुखिनरू'की भावना हो। यह कार्य तभी सम्भव होगा जब शिक्षक समुदाय और अभिभावक गण अपने बच्चों में आधुनिक शिक्षा के साथ- साथ अध्यात्म के बीज भी अंकुरित करें।

पूनम दिपक शिन्दे
शिक्षिका, मुंबई

यात्रा पर शुभ व अशुभ विचार

ब्रह्मांड प्रकृति में नित्य प्रतिदिन ऐसी घटनाएं घटित होती है जो प्राणि के विकास व ह्रास का वर्तमान में संकेत देती है। जिसका प्रभाव विशेषकर मानव समाज पर पड़ता है क्योंकि मानव ही ऐसा प्राणि है, जिसके पास सोचने समझने एवं किसी तथ्य, तत्व को खोजने की क्षमताएं निहित है। मैं सदैव ज्योतिष विज्ञान की वह सच्चाई मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश करता हूँ जो उसके जीवन के पल-प्रतिपल से संबंधित होती है।

मुस्कान जैसी ख्याति लब्ध पत्रिका के माध्यम से मेरा प्रयास सदैव ज्योतिष विज्ञान के सार्थक विषयों के प्रति जन सामान्य के ज्ञान को जागरूक करना एवं उसकी सत्यार्थ से अवगत कराना होता है। मुस्कान के पिछले अंक में मैंने स्वप्न एवं उसके प्रभाव को जन-जन तक पहुचने का एक प्रायास किया था तो आगामी अंक में शुभ –अशुभ पर अपनी जानकारी साझा करने की एक कोशिश है। ज्योतिष शास्त्र के संघीता विभाग में शुभा, शुभ, शकुनो का वर्णन है। बृहद संघीता के अनुसार मनुष्य ने पूर्व जन्म में जो शुभाशुभ कर्म किये है शकुन उनके शुभाशुभ फल दर्शाते हैं।

मंगलवार : पूर्व एवं दक्षिण यात्राओं के लिये शुभ होता है।

बुधवार : पूर्व एवं पश्चिम यात्रा के लिए शुभ होता है।

गुरुवार : दक्षिण को छोड़ सभी दिशाओं के लिये शुभ होता है।

शुक्रवार : शाम को शुरू की गई यात्र के लिये शुभ होता है।

शनिवार : अपने घर छोड़कर कहीं के यात्रा के लिये शुभ नहीं होता है।

न चाहते हुए भी यदि यात्रा आवश्यक है और दिशाशूल है तो यात्रा दोष को दूर करने के लिये ज्योतिष शास्त्र में कुछ उपाय बताए गए है।

प्रतिपदा हिन्दू पंचांग की पहली तिथि प्रतिपदा कही जाती है इस दिन चंद्रमा अपनी नई यात्रा पर निकलते है यह तिथि मंगलकारी होती है लेकिन इस दिन यात्रा अशुभ माना जाता है।

द्वितीया तिथि को यात्रा शुभ मानी जाती है।

तृतीया तिथि तीज को यात्रा कल्याण कारी होती है।

चतुर्थ दिवस की यात्रा शुभ नही होती है।

पंचमी की यात्रा शुभ होती है ।

षष्टी को यात्रा हानिकारक होती है।

सत्तमी की यात्रा अशुभ होती है।

अष्ठमी की यात्रा हानिकारक होती है।

नवमी इस तिथि को उग्रा कहते है कोई शुभकार्य वर्जित है।

दसमी को धर्मीनि कहा जाता है इस तिथि की यात्रा शुभ होती है।

एकादसी को ग्यास कहा जाता है इस तिथि को प्रारम्भ सभी कार्यो का फल शुभ होता है।

द्वादसी को यशोबला कहते है इस दिन कोई भी कार्य हानिकारक हो सकता है।

त्रयोदसी तेरस को कोई कार्य करने पर शुभ मंगल होता है।

चतुर्दशी इस दिन कोई भी कार्य बर्जित है।

पूर्णिमा को गुरु चद्रमा एक नक्षत्र में होते है इस दिन कोई यात्रा शुभ नही होती लेकिन यदि यात्रा रात्रि में की जाती है तो शुभ मंगल की संभावना रहती है।

यदि राहु के साथ बृष राशि मे मंगल है अंगारक योग बनता है जो खतरनाक होता है हिन्दू पंचांग की तीसवीं तिथि अमावस्या कृष्ण पक्ष का अंतिम दिन होता है इस तिथि की यात्रा बेहद अमंगलकारी होती है।

यात्रा के दिशाशूल--रविवार-पूर्व, सोमवार-आग्नेय कोण
मंगलवार-उत्तरदिशा बुधवार-ईशान एव नैऋत्य कोण
गुरुवार-दक्षिण दिशा शुक्रवार-वायव्य कोण
शनिवार--पूर्व दिशा

योगिनिवास दिशाशूल उभयपक्ष तिथि
१/९-पूर्व दिशा, ३/११-आग्नेय कोण दक्षिण दिशा, ४/१२ नैऋत्य कोण, ६/१४ पश्चिम, ७/१५ वायव्य, २/१० उत्तर, ८/३० ईशान कोण यात्रा नही करनी चाहिए।

नक्षत्रवार दिशाशूल: ज्येष्ठा -पूर्व दिशा पूर्वा भाद्रपद-दक्षिण, रोहिणी-पश्चिम दिशा उत्तरा फाल्गुनी -उत्तर दिशा।

दिन के अनुसार किये जाने वाले यात्रा के उपाय--

रविवार-दही शक्कर या पान इलाइची खा कर यात्रा शुरू करें।
सोमबार-खीर खा कर यात्रा प्रारम्भ करें।
मंगलवार -गुड़ खा कर यात्रा प्रारम्भ करें।
बुधवार-दूध पीकर यात्रा शुरू करें।
गुरुवार-दही या जीरा खा कर यात्रा शुरू करें।
शुक्रवार-मीठा दूध या लस्सी पी कर यात्रा शुरू करें।
शनिवार-उड़द दाल की खिचड़ी खा कर यात्रा शुरू करें।

नंदलाल मणि त्रिपाठी पीतांम्बर
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

देख दुखी हैं कृष्णा

भक्ति कृष्ण की है यही, और यही है धर्म !
स्थान,जरूरत, काल के, करो अनुरूप कर्म !!
सब पाखंडी हो गए, जनता, राजा, संत !
देख दुखी हैं कृष्णा, धर्म-कर्म का अंत !!
जो देखो वो दे रहा, सौरभ अब उपदेश !
मिटे किसी के है नहीं, मन के पाप क्लेश !!
व्यर्थ मने जन्माष्टमी, व्यर्थ सभी कीर्तन !
नहीं कर्म में धर्म यदि, साफ़ नहीं है मन !!
सभी नाथ को गा रहें, अमल करें ना कोय !
नहीं कर्म में कृष्णा, तो कैसे दिव्य होय !!

डॉ. सत्यवान सौरभ
भिवानी, हरियाणा

भुट्टा-पालक की चटपटी लाजवाब पकौड़ी

सामग्री : १०० ग्राम पालक कटा हुआ, एक कटोरा चम्मच बेसन, ४-५ नरम दाने वाले भुट्टे, ४-५ हरी मिर्च, एक टुकड़ा अदरक, ४-५ लहसुन की कली, एक-एक छोटा चम्मच जीरा व मोटी सौंफ, चुटकी भर हींग, बारीक कटा हरा धनिया, नमक, लाल मिर्च पिसी हुई एवं तलने के लिए तेल।

विधि : सबसे पहले भुट्टों को साफ करके कद्दूकस करें। अब भुट्टे, पालक, हरी मिर्च, अदरक एवं लहसुन को मिक्सी में दरदरा पीसें। तेल को छोड़कर शेष सभी मसाला सामग्री इसमें मिलाएं और गाढ़ा घोल बना लें। अब कड़ाही में तेल गरम करके पालक-भुट्टा की पकौड़ी को कुरकुरी तल लें और हरी चटनी या सॉस के साथ इसे गरमा-गरम परोसें। साथ ही गरमा-गरम चाय का भी आनंद लें।

कच्चे केले की कुरकुरी पकौड़ी

सामग्री : २०० ग्राम सिंघाड़े का आटा, ४-५ कच्चे केले, २ हरी मिर्च, सेंधा नमक (व्रत में खाने वाला), अदरक का टुकड़ा, घी अथवा मूंगफली का तेल (पर्याप्त मात्रा में तलने के लिए)।

विधि : सबसे पहले केले के दो टुकड़े करके छिलके सहित उबाल लीजिए। ध्यान रखें कि केले ज्यादा गलने न पाएं। ठंडे होने पर इनके छिलके उतार कर गोल-गोल टुकड़े काट कर रख लें। टुकड़े ज्यादा मोटे न रखें। अब सिंघाड़े आटे का घोल तैयार करें। इसमें अपने स्वादानुसार हरी मिर्च, अदरक काट कर डालें तथा अंदाज से नमक मिला दें। घोल को गाढ़ा ही रहने दें। मोयन के लिए थोड़ा-सा घी अथवा तेल घोल में डाल दें। एक कड़ाही में मूंगफली का तेल गरम कर लें और केले के टुकड़ों को घोल में लपेट कर तेल में छोड़ते जाएं। दोनों तरफ से कुरकुरे होने तक सेंक लें। अब इन पकौड़ों को हरी चटनी या दही के साथ पेश करें।

लाजवाब पनीर के फलाहारी पकौड़े

सामग्री : सौ ग्राम पनीर, एक कप सिंघाड़े का आटा, पिसी काली मिर्च आधा टी स्पून, जीरा पावडर आधा टी स्पून, नमक स्वादानुसार, हरी मिर्च दो (बारीक कटी), बारीक कटा हरा धनिया, तेल तलने के लिए। **विधि** : पनीरको चौकोर या लंबे टुकड़ों काट लें। सिंघाड़े के आटे में अन्य सारी सामग्री मिलाएं व जरूरत के अनुसार पानी डालकर गाढ़ा घोल बना लें। एक कड़ाही में तेल गरम करें। अब पनीर के टुकड़ों को सिंघाड़े के घोल में एक-एक करके डुबाकर कड़ाही में डालकर सुनहरे होने तक तलें। इन्हें निकालकर पेपर पर रखें, ताकि अतिरिक्त तेल निकल जाए। इन्हें गरमागरम ही हरी चटनी के साथ सर्व करें।

लाजवाब चॉकलेट गुझिया

सामग्री : २५० ग्राम मैदा, १५० ग्राम पिसी शक्कर, ५० ग्राम घी (मोयन के लिए), १ कप कसा खोया, १ टेबल स्पून कोको पावडर, ५० ग्राम चॉकलेट चिप्स, कुछ बूंद बादाम एसेंस, तलने के लिए घी, परोसने के लिए १/२ कप चॉकलेट सॉस।

विधि : सबसे पहले मैदे में घी का मोयन डालकर पानी की मदद से सख्त आटा गूंथ लें। एक कड़ाही में खोया भून लें। ठंडा छोने पर इसमें कोको पावडर, पिसी शक्कर, बादाम एसेंस एवं चॉकलेट चिप्स मिलाकर भरावन तैयार कर लें। गूंथे मैदे की लोइयां बनाकर प्रत्येक लोई को पतला बेलें। इस पर भरावन सामग्री रखकर हाथ से मोड़कर गुझिया का आकार दें। अब इन्हें गर्म घी में गुलाबी तल लें। लीजिए, स्वादभरी चॉकलेट गुझिया तैयार है। इन्हें चॉकलेट सॉस से सजाकर पेश करें। होली के रंगबिरंगे त्योहार पर इस गुझिया से सभी का मुंह मीठा करें।

प्रस्तुति : श्रीमती शकुन्तला धनराज मिश्रा

छोटी सरदारनी फेम निमरित कौर अहलूवालिया का ओटीटी डेब्यू

छोटी सरदारनी की एक्ट्रेस निमरित कौर संजय लीला भंसालीके शो हीरामंडी में नजर आ सकती हैं. शो से जूड़े एक सूत्र ने बताया कि निमरित जल्द ही अपना ओटीटी डेब्यू करने जा रही हैं। संजय लीला भंसाली की आने वाली वेब सीरीज हीरामंडी में वे अहम किरदार निभाएंगी. अभी निमरत की कास्टिंग पर ऑफिशियल बयान नहीं आया है। कई टीवी कलाकारवेब की दुनिया में कदम रख रहे हैं और वे इसमें अच्छा नाम भी कमा रहे हैं. इस फेहरिस्त में अबनिमरित कौर अहलूवालिया का नाम जुड़ने जा है। एक्ट्रेस संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज हीरामंडी में नजर आ सकती हैं. निमरित को छोटी सरदारनी में मेहर और सहर के रूप में देखा गया है। वे टीवी की पॉपुलर अदाकारा हैं। स्पॉटबॉय की रिपोर्ट केअनुसार,छोटी सरदारनी की एक्ट्रेस निमरित कौर संजय लीला भंसालीके बड़े बैनर वेब शो हीरामंडी में नजर आ सकती हैं। शो से जूड़े एक सूत्र ने बताया कि निमरित जल्द ही अपना ओटीटी डेब्यू करने जा रही हैं। संजय लीला भंसाली की आने वाली वेब सीरीज हीरामंडी में वे अहम किरदार निभाएंगी. अभी निमरत की कास्टिंग पर ऑफिशियल बयान नहीं आया है।

जी लिया अपना रॉकस्टार बनने का सपना- अध्विक महाजन

ज़ी टीवी का फिक्शन शो "तेरी मेरी इक्क जिंदड़ी" अपने पहले एपिसोड से ही दो अलग-अलग इंसानों, माही (अमनदीप सिद्ध) और जोगी (अध्विक महाजन) की अनोखी प्रेम कहानी के साथ दर्शकों का मनोरंजन करने में सफल रहा है। दोनों ने अपनी आकर्षक केमिस्ट्री और दिलकश प्रेम कहानी से सभी का दिल जीत लिया है। असल में इस कहानी में आ रहे कई दिलचस्प मोड़ ने दर्शकों की उत्सुकता बढ़ा दी है, खासतौर से जोगी और माही की प्रेम कहानी में अवनीत (आलिशा पनवर) की अप्रत्याशित एंट्री के बाद से दर्शकों की दिलचस्पी पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। जहां अवनीत की दखलअंदाजी ने ज़ाहिर तौर पर माही को नाराज कर दिया है, वहीं जोगी, माही की इस फिक्र से अनजान है। बल्कि इस समय तो जोगी अपना पूरा ध्यान अपने नए एलबम की रिलीज़ और देश का उभरता हुआ नया रॉकस्टार बनने में लगा रहा है। जोगी के किरदार में आए इस नए ट्विस्ट को और बेहतर ढंग से सामने लाने के लिए अध्विक महाजन ने हाल ही में एक नया अवतार लिया, जो जोगी के ओरिजिनल लुक से बिल्कुल अलग था। अपने कपड़ों की तड़क-भड़क बरकरार रखते हुए अध्विक ने ब्राइट रेड रंग की चमकीली जैकेट पहनी, जिस पर स्पाइक्स उकेरे गए थे। इससे उनका हुलिया थोड़ा अलग बन गया। इसमें उन्होंने कुछ छोटी-मोटी एसेसरीज और ट्रेंडी ब्लैक शेड्स भी शामिल किए, जिसके बाद वो सेट पर किसी रॉकस्टार से कम नहीं लग रहे थे। असल में वो अपने लुक से इतने रोमांचित थे कि उस पल उन्हें ऐसा लगा कि जैसे उनका सपना सच हो गया है।

द कपिल शर्मा शो के खिलाफ शिकायत

छोटे परदे का लोकप्रिय शो "द कपिल शर्मा शो" मुश्किल में आ गया है। मध्यप्रदेश के शिवपुरी की जिला अदालत में एक व्यक्ति ने इस शो के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। उसे इस बात पर आपत्ति है कि शो के एक एपिसोड में कोर्ट रुम के सेट पर एक्टर्स को शराब पीते हुए दिकाया गया है। शिकायतकर्ता का कहना है कि इन अभिनेताओं ने कोर्ट का अपमान किया है। यह एपिसोड १९ जनवरी २०२० को प्रसारित किया गया था। २४ अप्रैल २०२१ को दोबारा इसे दिखाया गया। शिकायतकर्ता के अनुसार कोर्ट रूप में शराब पीते दिखाना अदालत की अवमानना है और दोषियों पर कार्रवाई की जाना चाहिए। शिकायत में कहा गया है कि इस शो में महिलाओं पर भी भद्दी टिप्पणियां की जाती हैं। एक अक्टोबर को इस मामले पर सुनवाई होगी। गौरतलब है कि कपिल शर्मा का शो जहां एक ओर खूब पसंद किया जाता है वहीं कई लोग ऐसे भी हैं जो इसे फूहड़ बताते हैं। खासतौर पर पुरुष कलाकारों द्वारा महिलाओं के कपड़े पहन कर जो हरकत की जाती है वो कई लोगों को पसंद नहीं आती है। यह शो एक बार बंद होने के बाद हाल ही में फिर शुरू हुआ है।

रिया चक्रवर्ती की फीस जान कर रह जाएंगे दंग

रिया चक्रवर्ती वो नाम है जो पिछले डेढ़ सालों से लगातार चर्चाओं में बना हुआ है। सुशांत सिंह राजपूत के निधन के बाद जो कुछ रिया ने झेला है उसका अनुभव कोई नहीं कर सकता। क्या नहीं बोला गया उनको? मीडिया ट्रायल से लेकर तो अदालत तक के चक्कर उन्होंने लगाए। अब यही रिया भारत के सबसे विवादित और लोकप्रिय रियलिटी शो 'बिग बॉस १५' में नजर आने वाली हैं। संभव है कि रिया इस शो के जरिये अपना पक्ष रखे। रिया के आने से निश्चित रूप से शो की लोकप्रियता ऊंचाई छूने वाली है। रिया के समर्थक और आलोचक दोनों की नजर रिया की हर हरकत पर होगी। खबर है कि रिया को शो के लिए राजी करने के लिए भारी फीस दी गई है। सूत्रों का कहना है कि रिया को प्रतिदिन के ५ से ६ लाख रुपये की फीस चुकाई जाएगी। मेकर्स को रिया से काफी उम्मीद है।

खतरों के खिलाड़ी के विनर बने अर्जुन बिजलानी

स्टंट रियलिटी शो "खतरों के खिलाड़ी ११" को अपना विनर मिल चुका है। इस शो का ग्रैंड फिनाले का ऑन एयर हुआ। अर्जुन बिजलानी ने खतरों के खिलाड़ी ११ की ट्रॉफी अपने नाम कर ली। अर्जुन बिजलानी को ट्रॉफी के साथ २० लाख रुपए और एक शानदार कार ईनाम में मिली। विशाल ने टास्क अबोर्ट कर दिया था जिसके बाद अर्जुन और दिव्यांका के बीच टक्कर थी। इस टास्क में दिव्यांका को हराकर अर्जुन ने खतरों के खिलाड़ी की ट्रॉफी अपने नाम कर ली है। दिव्यांका त्रिपाठी शो की पहली रनर अप रहीं। वहीं विशाल आदित्य सिंह सेकेंड रनर अप रहे। शो जितने के बाद अर्जुन बिजलानी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक वीडियो भी शेयर किया है। इसे शेयर करते हुए उन्होंने लिखा, "जीत-हार तो चलती रहती है, लेकिन शो में हमारा सफर सबसे ज्यादा मायने रखता है। मुझे लगता है हम सभी ने खतरों के खिलाड़ी में मजे किए और सच कहूं तो विशाल आदित्य सिंह और दिव्यांका त्रिपाठी भी विनर्स हैं।'अर्जुन बिजलानी की तारीफ खुद शो के होस्ट रोहित शेट्टी ने भी की थी। उन्होंने कहा था कि अर्जुन हमेशा अपना टास्क शांति से कम्प्लीट करते हैं वो ना हड़बड़ी मचाते हैं ना ही जीतने के बाद दिखावा करते हैं। वह टास्क खत्म करते हैं और वापस अपनी जगह पर आ जाते हैं। हर बार उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन किया है।

समाजसेविका श्रीमती विमलादेवी गुप्ता सड़क मार्ग का लोकार्पण अग्रवाल समाज से लिए ऐतिहासिक क्षण

मुंबई महानगर की सुप्रसिद्ध समाजसेविका, अग्रोहा विकास ट्रस्ट मुंबई की प्रथम महिलाध्यक्षा व अग्रवाल सेवा समाज सांताक्रुझ, मुबई की संस्थापिका श्रीमती विमला के गुप्ता के नाम से सांताक्रुझ पूर्व, प्रभात कॉलनी रोड़ नं २ का नामकरण श्रीमती विमलादेवी गुप्ता के नाम पर किया गया। अग्रवाल समाज के लिए यह ऐसिहासिक क्षण से कम ना था। इस मार्ग का उद्घाटन प्रमुख अतिथि मुंबई महानगर पालिका के पूर्व महापौर व स्थानीय नगरसेवक विश्वनाथ मांडेश्वर, मनपा की सहायक आयुक्त अलका सहाणे के कर कमलों से हुआ। स्व. श्रीमती विमलादेवी गुप्ता के कार्यों की लोगों ने सराहना की। सुपुत्र भूपेंद्र गुप्ता, दिनेश गुप्ता व विरेंद्र गुप्ता व उनके परिवार के लिए यह सुखद दिन था। पूरा परिवार माँ के दिखाए हुए मार्ग पर सामाजिक सेवा में लिए तन-मन-धन से समर्पित होकर कार्य कर रहा है। उपस्थिति लोगों ने गुप्ता परिवार की सामाजिक सेवाओं को सराहा। इस अवसर पर अग्रोहा विकास ट्रस्ट के केंद्रीय अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल, केंद्रीय मंत्री आनंद प्रकाश गुप्ता, मुंबई भाजपा के प्रवक्ता अजय सिंह, कांग्रेस नेता शिवजी सिंह, समाजसेवी रमाकात टिबड़ेवाल, सज्जन डोकानिया, विजय बांकड़ा, मोहन अग्रवाल, राजू डालमिया, ओमप्रकाश चमडिया, हर्षवर्धन अग्रवाल, ओंकार चौधरी, सोहनलाल अग्रवाल, श्यामसुंदर मोदी, हरिराम चौधरी, विनोद देवड़ा, रमेश कुरुप, रविंद्र रुईया, सुरेश अग्रवाल सहित समाज के कई गणमान्य पक्तियों ने उपस्थित रहकर इस उपलब्धि के लिए भूपेंद्र गुप्ता, दिनेश गुप्ता व विरेंद्र गुप्ता को बधाई व शुभकामनाएँ दी।

नुसरत भरूचा एशियन कंटेंट अवार्ड्स में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए हुईं नॉमिनेट

प्यार का पंचनामा, आकाशवाणी, सोनू के टीटू की स्वीटी, ड्रीम गर्ल और छलांग जैसी फिल्मों में काम कर चुकीं नुसरत भरूचा अपने फैंस के दिलों पर राज करती हैं। नुसरत भरूचा नेअजीब दास्तान' में राज मेहता द्वारा निर्देशित 'खिलौना' शॉर्ट फिल्म में अपने अभिनय से बहुत प्रशंसा हासिल की। इस शॉर्ट फिल्म में नुसरत ने मीनल का किरदार निभाया। उस फिल्म के लिए उन्हें एशियाई कंटेंट अवार्ड में बेस्ट एक्ट्रेस के लिए नॉमिनेट किया गया है। एशियन कंटेंट अवाडर्स २०२१ द्वारा मान्यता प्राप्त होना, उनकी उपलब्धियों में शामिल हो चुका है।

एसीए एशियाई क्षेत्र में उत्कृष्ट कंटेंट और प्रतिभाशाली कलाकारों को मान्यता देकर अधिक ओरिजिनल प्रोडक्शन और बेहतर क्रिएटिव को प्रोत्साहित करने के लिए बुसान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की प्रतिबद्धता है। इस साल के विजेताओं की घोषणा जल्द की जाएगी।

नुसरत ने यह खबर अपने सोशल मीडिया पर शेयर की और लिखा, मैं बहुत खुश हूं की बुसान फिल्म फेस्टिवल ने अपने तीसरे एशिया कंटेंट अवार्ड के लिए नॉमिनेट किया है। मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं अपना नाम अलग अलग देश की टैलेंटेड अभिनेत्रियों के साथ देखते हुए।

विज्ञापन की वजह से मुश्किल में फंसीं आलिया भट्ट

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट अपने नए टीवी एड की वजह से मुश्किलों में घिर गई हैं। आलिया के इस विज्ञापन में कन्यादान की परंपरा पर सवाल उठाया गया है। इस विज्ञापन के सामने आते ही आलिया पर हिन्दू धर्म की परंपराओं का मजाक उड़ाने का आरोप लगने लगा। वहीं अब इस विज्ञापन को लेकर आलिया भट्ट के खिलाफ मुंबई के सांताक्रूज थाने में शिकायत दर्द कराई गई हैं। खबरों के अनुसार शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि आलिया भट्ट ने हिन्दू भावनाओं को आहत किया है और कन्यादान को प्रतिगामी तरीके से दिखाया है। इस मामले में मान्यवार कंपनी और आलिया भट्ट के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई है। इस विज्ञापन में आलिया भट्ट को दुल्हन के रूप में दिखाया गया है। वह शादी के मंडप में बैठी हैं और सवाल करती हैं कि मैं क्या कोई दान की चीज हूं? इस विज्ञापन के बारे में आलिया भट्ट ने कहा था, मैं पूरी तरह से इस विचारधारा से इत्तेफाक रखती हूं और ये एक ऐसी चीज है जो मेरे दिल के बहुत करीब है। मैं इस बात से खुश हूं कि मैं इस एड का हिस्सा बन पाई और लोगों तक एक ऐसा संदेश पहुंचा पाई जिससे समाज में एक सकारात्मक बदलाव हो।

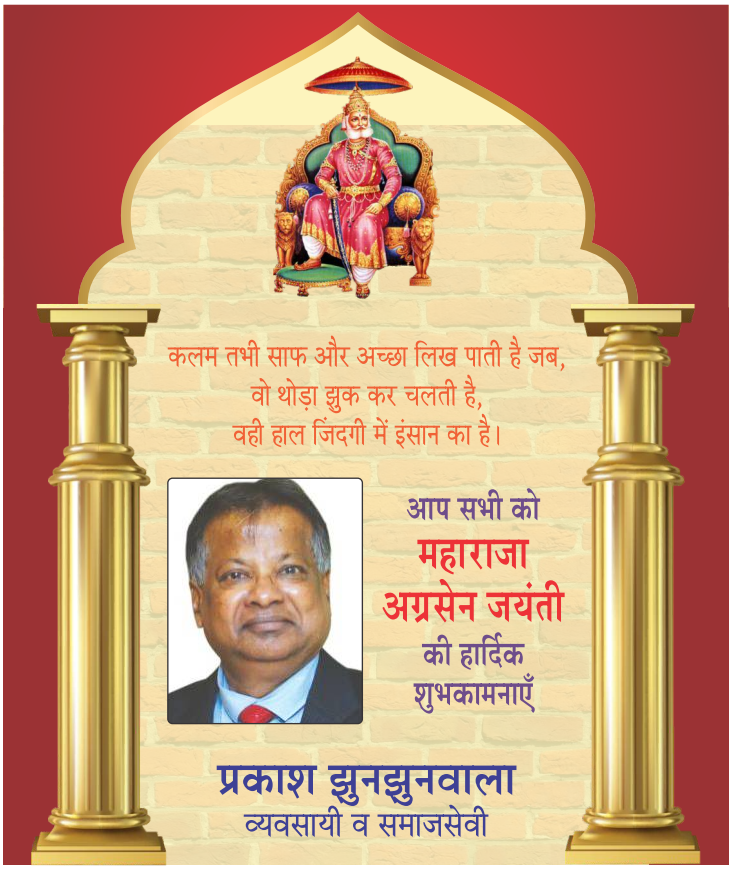

अजय देवगन की फिल्म मैदान की रिलीज डेट आई सामने

महाराष्ट्र में सिनेमाघर दोबारा खोलने का आदेश आने के बाद कई फिल्मों की रिलीज डेट भी सामने आ गई है। कई बिग बजट फिल्मों को सिनेमाघरों में रिलीज करने का ऐलान हो चुका है। वहीं अब अजय देवगन की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'मैदान' की रिलीज डेट भी सामने आ चुकी है। अजय देवगन ने ट्वीट कर फैंस को इस बात की जानकारी दी है। अजय देवगन ने फिल्म के तीन पोस्टर शेयर करते हुए बताया कि मैदान ३ जून २०२२ को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। मेकर्स इसे चार भाषाओं में रिलीज करेंगे। हिन्दी के अलावा फिल्म तमिल, तेलुगू और मलयालम भाषा में रिलीज होगी। फिल्म के पोस्टर शेयर करते हुए अजय ने लिखा, मैदान, एक स्टोरी जो हर भारतीय से जुड़ेगी। ये ऐसी फिल्म है जो मेरे लिए काफी महत्वपूर्ण है। अपने कैलेंडर में डेट मार्क कर लीजिए। फिल्म थिएटर में ३ जून २०२२ को रिलीज होगी।

निहारिका शर्मा उभरती हुई कलाकार

मुंबई ने बहुतों के ख्वाबों को पंख दिया है। इसी को ध्यान में रखकर निहारिका शर्मा मुंबई की ग्लैमर भरी दुनिया में कदम रख चुकी है। पिछले दो वर्षों से वे कई शॉर्ट फिल्म्स, एल्बम सॉन्ग, क्राइम पेट्रोल सीरियल इत्यादि में यादगार भूमिका निभाकर फैन्स के बीच में वाहवाही बटोर रही हैं। उनका कहना है, इस क्षेत्र में काम करना आसान नहीं है, लेकिन मेहनत जरुर रंग लाती है और आशा है एक दिन वह दिन भी आएगा जब फैन्स इनके कार्य को खूब सराहयेंगे।

BEST ROADWAYS LIMITED

Mobilizing Your Growth

FTL I PORT TO CFS I ODC I WAREHOUSING

36 Hour Express Delivery

MUMBAI - DELHI - MUMBAI

Mumbai / JNPT & New Delhi / NCR region

WITH OUR OWN ISO CONTAINERISED FLEET

IDEAL FOR GOODS THAT NEED TO BE TRANSPORTED SAFELY & QUICKLY

- MEDICINES
- DELICATE DURABLES
- PAPER PRODUCTS
- FRAGILE GLASSWARE
- HOUSEHOLD GOODS
- OTHER HIGH WORTH GOODS

0 % CHANCES OF DAMAGE, DENTS, WETNESS, PILFERAGE, LEAKAGE OR THEFT

- LARGE VOLUMES CAN BE ACCOMMODATED

Customs Bonded Warehouse Facility Available

Contact: Mr. Ashwani Cell: 09594937777 bondedwarehouse@brl.in

Corporate Office:
5th Floor, C Wing, Pramukh Plaza,
Cardinal Gracious Rd, Andheri East,
Mumbai, Maharashtra 400099.
Email:mumbai@bestroadways.com
Tel No: 022 - 23777777
Fax No: 022 - 23777778

Registered Office:
BEST HOUSE, XX-118/1,Najafgarh Road,
Near Swantra Bharat Mill Main Gate,
New Delhi 100036.
Email:delhi@bestroadways.com
Tel No: 011 - 45377777
Fax No: 011 - 45377778

JNPT Office:
BEST HOUSE, Plot No.30A & 30B
Sector-2, Opp.APM Terminal, DRONAGIRI
Navi Mumbai - 400707.
Email:info@bestroadways.com
Tel No: 022 - 27247777
Fax No: 022 - 27243077 / 3177

UNSAME

RYAL
Logistics Pvt.Ltd.

Head Office: C-Wing, 2nd Floor, Pramukh Plaza, Opp. P&G Plaza,
Cardinal Gracias Road, Chakala, Andheri (E), Mumbai - 400 099. INDIA.
Tel.: +91-22-6193 6969 (Hunting Lines) | Fax : +91-22-6193 6999
Email : info@ryal.in | **www.ryal.in**

RTN. RAJKUMAR AGARWAL

OUR SERVICES

- Air Freight
- Sea Freight
- Custom Broking
- ODC & Project Cargo
- UN Certified Packaging
- Dangerous Goods
- Pharma & Temperature Control

IATA

MTO

COMBINED LOGISTICS NETWORKS
12 years of CLN Membership

1997-2017 Years of Excellence
Carrying your commitments

Life Logistics
THE GLOBAL PHARMACEUTICAL LOGISTICS ALLIANCE

MUMBAI | AHMEDABAD | BENGALURU | CHENNAI | DAHEJ | DELHI | HYDERABAD